Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-21
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 08 अगस्त से 14 अगस्त 2018 तक
श्रावण कृष्ण द्वादशी से श्रावण शुक्ल चतुर्थी तृतीया 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

हरियाली तीज... पृष्ठ- 2

सीख लेना चाहिए... पृष्ठ- 3

मेथी के गुण.. पृष्ठ- 4

नाम के आगे उपजाति... पृष्ठ- 5

दूसरों की वाहवाही... पृष्ठ- 12

- सच का सामना करना सीखें
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली और समाज
- लिंगायत पन्थ को हिन्दू समाज से पृथक करने के लिए कांग्रेस का अंतर्राष्ट्रीय और घातक षड्यंत्र
- भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान

सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़, एक जवान हुआ शहीद

आतंकवाद क पूर्ण सफाया हो – हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा इलाके में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ के दौरान सेना का एक जवान शहीद हो गया है, जबकि सेना के एक अन्य जवान को गंभीर हालत में दुर्गमूला स्थित सेना के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सुरक्षाबल से जुड़े वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, जम्मू–कश्मीर में जारी ऑपरेशन ऑल आउट के तहत सुरक्षाबलों की एक टीम ने कुपवाड़ा के अंतर्गत आने वाले कांडी जंगल क्षेत्र में सर्च

शेष पृष्ठ 11 पर

भारत की तरक्की देख पाकिस्तान के नेता को लगी मिर्ची

हिन्दुस्तान पुनः विश्व गुरु बनेगा – हिन्दू महासभा

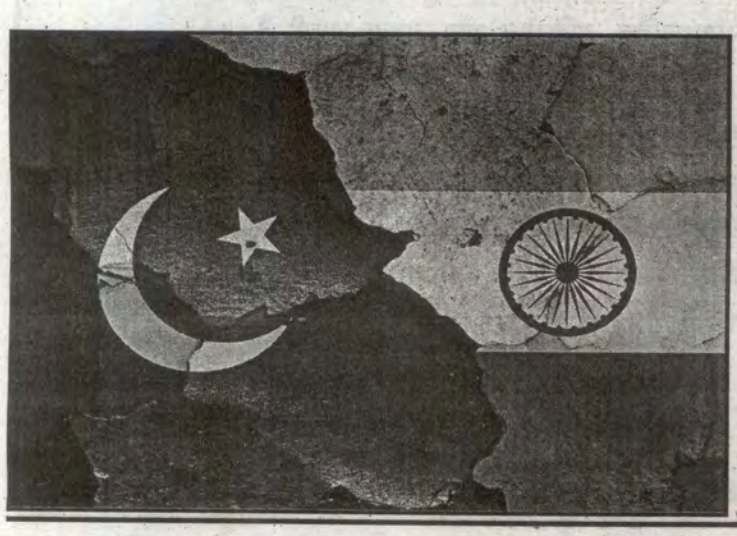

● संवाददाता ●

पाकिस्तान में २५ जुलाई को आम चुनाव हुए। इन चुनावों में ज्यादातर नेताओं के प्रचार में निशाना भारत की तरफ ही रहा। यहां के प्रचार पर गौर करें तो पाएंगे कि तमाम नेता भारत की तरक्की से चिढ़े हुए नजर आते हैं। ताजा मामला पाकिस्तान के प्रमुख राजनीतिक दल पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज से जुड़ा हुआ है। पीएमएलएन प्रमुख शाहबाज शरीफ ने भारत के खिलाफ जहर उगलते हुए एक सभा में कहा कि आज हिंदुस्तान जी–२० में जाता है तो उनके दिल में तीर लगते हैं, उन्होंने कहा कि पीएम मोदी वहां जाके खड़ा होता है और हम तमाशा देख रहे हैं। लाहौर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के भाई शाहवाज शरीफ ने कहा पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था लगातार गिर रही है, स्टॉक एक्सचेंज नीचे जा रहा है। हमारे रिजर्व केवल एक महीने का आयात कर सकते हैं। हमारे निवेशक लंदन और दुबई वापस चले गए हैं और सोच रहे हैं पाकिस्तान में क्या होगा। उन्होंने कहा कि हमें इकबाल का पाकिस्तान बनाने के लिए मौके का फायदा उठाना चाहिए और यह तभी हो सकता है जब पाकिस्तान में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हों। शाहबाज शरीफ ने कहा भारत में कई

शेष पृष्ठ 11 पर

हरियाली तीज

हरियाली तीज का उत्सव श्रावण मास में शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाया जाता है। यह उत्सव महिलाओं का उत्सव है। सावन में जब सम्पूर्ण प्रकृति हरी चादर से आच्छादित होती है उस अवसर पर महिलाओं के मन मयूर नृत्य करने लगते हैं। वृक्ष की शाखाओं में झूले पड़ जाते हैं। पूर्व उत्तर प्रदेश में इसे कजली तीज के रूप में मनाते हैं।

सुहागन स्त्रियों के लिए यह व्रत काफी मायने रखता है। आस्था, उमंग, सौंदर्य और प्रेम का यह उत्सव शिव–पार्वती के पुन मलन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। चारों तरफ हरियाली होने के कारण इसे हरियाली तीज कहते हैं। इस मौके पर महिलाएं झूला झूलती हैं, लोकगीत गाती हैं और खुशियां मनाती हैं।

पर्व की मुख्य रस्म : इस उत्सव को हम मेंहदी रस्म भी कह सकते हैं क्योंकि इस दिन महिलाये अपने हाथों, कलाइयों और पैरों आदि पर विभिन्न कलात्मक रीति से मेंहदी रचाती हैं। इसलिए हम इसे मेहंदी पर्व भी कह सकते हैं।इस दिन सुहागिन महिलाएं मेहँदी रचाने के पश्चात् अपने कुल की बुजुर्ग महिलाओं से आशीर्वाद लेना भी एक परम्परा है।

उत्सव में सहभागिता : इस उत्सव में कुमारी कन्याओं से लेकर विवाहित युवा और वृद्ध महिलाएं सम्मिलित होती हैं। नव विवाहित युवतियां प्रथम सावन में मायके आकर इस हरियाली तीज में सम्मिलित होने की परम्परा है। हरियाली तीज के दनि सुहागन स्त्रियां हरे रंग का ऋृंगार करती हैं। इसके पीछे धार्मिक कारण के साथ ही वैज्ञानिक कारण भी शामिल है। मेंहदी सुहाग का प्रतीक चिन्ह माना जाता है। इसलिए महिलाएं सुहाग पर्व में मेंहदी जरूर लगाती है। इसकी शीतल तासीर प्रेम और उमंग को संतुलन प्रदान करने का भी काम करती है। ऐसा माना जाता है कि सावन में काम की भावना बढ़ जाती है। मेंहदी इस भावना को नियंत्रित करता है। हरियाली तीज का नियम है कि क्रोध को मन में नहीं आने दें। मेंहदी का औषधीय गुण इसमें महिलाओं की मदद करता है। इस व्रत में सास और बड़े न दुल्हन को वस्त्र, हरी चूड़ियां, श्रृंगार सामग्री और मिठाइयां भेंट करती हैं। इनका उद्देश्य होता है दुल्हन का श्रृंगार और सुहाग हमेशा बना रहे और वंश की वृद्धि हो।

पौराणिक महत्व : कहा जाता है कि इस दिन माता पार्वती सैकड़ों वर्षों की साधना के पश्चात् भगवान् शिव से मिली थी। यह भी कहा जाता है कि माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए १०७ बार जन्म लिया फिर भी माता को पति के रूप में शिव प्राप्त न हो सके। १०८वीं बार माता पार्वती ने जब जन्म लिया तब श्रावण मास की शुक्ल पक्ष तृतीय को भगवन शिव पति रूप में प्राप्त हो सके। तभी से इस व्रत का प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर जो सुहागन महिलाएं सोलह श्रृंगार करके शिव–पार्वती की पूजा करती हैं उनका सुहाग लम्बी अवधि तक बना रहता है। साथ ही देवी पार्वती के कहने पर शिवजी ने आशीर्वाद दिया कि जो भी कुंवारी कन्या इस व्रत को रखेगी और शिव पार्वती की पूजा करेगी उनके विवाह में आने वाली बाधाएं दूर होंगी साथ ही योग्य वर की प्राप्ति होगी। सुहागन स्त्रियों को इस व्रत से सौभाग्य की प्राप्ति होगी और लंबे समय तक पति के साथ वैवाहिक जीवन का सुख प्राप्त करेगी। इसलिए कुंवारी और सुहागन दोनों ही इस व्रत का रखती हैं।

पर्व का मुख्य केंद्र : हरियाली तीज का उत्सव भारत के अनेक भागों में मनाया जाता है, परन्तु राजस्थान में विशेषकर जयपुर में इसका विशेष महत्त्व है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह अधिकतर लोगों के कार्यों में प्रगति होने के संकेत है। कालान्तर में मिलने वाले आनन्द की अनिश्चित प्रतीक्षा करने के बजाय तत्काल मिलने वाले इन्द्रिय सुख को अपने जीवन का लक्ष्यं बनाकर चलें।

वृष - इस सप्ताह आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी। वाणी में मधुरता बनायें रखना अतिआवश्यक है। कुछ लोगों का रूका हुआ धन भी मिल सकता है। आप दूसरों के प्रति बेहतर सोचे यह प्रवृत्ति आपको सुखद अनुभूति करायेगी।

मिथुन - यह सप्ताह आपके लिए अच्छा साबित होगा लेकिन केन्द्र में ग्रहों का अभाव है, इसलिए कोई बड़े बदलाव नहीं होंगे। आप–अपनी प्राथमिकता सुनिश्चत करके कार्य करे तो सफलता मिलेगी। कुछ लोग शक्तिवर्धक दवाओं से स्वास्थ्य बनाने का प्रयास करेंगे परन्तु यह उचित नहीं है।

कर्क - इस सप्ताह कार्य व व्यापार में प्रगति होगी। कुछ लोगों की नई योजनाओं का शुभारंभ होगा। जो लोग राजनैतिक रूप से सक्रिय है, उनकों अपने आत्मविश्वास में वृद्धि करने की आवश्यकता है। भाई–बन्धवों से तनाव मिलने के आसार है।

सिंह - यह सप्ताह आपके लिए शुभ समाचार लेकर आयेगा। जल्द ही आपके घर में मांगलिक कार्य होने के संकेत नजर आ रहें है। ऑफिस के माहौल से मन कुछ खिन्न हो सकता है।

कन्या - कोई भी कार्य आप कर रहें है, तो बेहतर परिणाम पाने के लिए यह जरूरी है कि जो लोग आपके साथ जुड़े उनका ख्याल अवश्य रखें। कुछ लोगों को अचानक यात्रा करनी पड़ सकती है।

तुला - इस सप्ताह आपके द्वारा कुछ ऐसा होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे जिसके दूरगाामी परिणाम काफी लाभदायक सिद्ध होगें। ऑफिस के कार्यों के प्रति थोड़ी सी भी लापरवाही आपके लिए कष्टकारी हो सकती है।

वृश्चिक - इस सप्ताह आप–अपनी आत्मा की आवाज सुनकर ही किसी पर निर्णय ले तो बेहतर होगा। काम–धन्धों में आ रही रूकावटें में कमी आयेगी। धार्मिक चिन्तन करना आपके लिए ज्यादा हितकारी रहेगा। किसी का कार्य कराने से आपको धन का लाभ हो सकता है।

धनु - इस सप्ताह कुछ लोगों को समाज में सक्रिय होना पड़ेगा जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आयेगा। किसी चीज को पाने के लिए संयम और धैर्य की आवश्यकता पड़ती है। कुछ लोगों की अर्थ से जुड़ी समस्याओं का समाधान होने के संकेत मिल रहें है।

मकर - इस सप्ताह कुछ लोगों के रूके हुये कार्य सम्पन्न होंगे एंव नयी योजनाओं पर विचार–विमर्श भी होगा। कुछ लोगों को सन्तान की ओर सुखद समाचार मिलने पर महसूस होगा कि हमने जिन्दगी की एक लड़ाई जीत ली है।

कुम्भ - इस सप्ताह पारिवारिक उलझनों के कारण कार्य व व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। आप–अपनी भावनाओं में बहकर अपनी मूल प्रवृति को भूल सकते है। आप जिन परिस्थितियों में अपने–आपको प्रस्तुत करते हैं, वह संयम का परिचायक है।

मीन - इस सप्ताह आप सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेंगे जिससे लोग आपकी प्रंशसा करेंगे। आप खोये हुये अवसरों की कहानी न बनें, जो अवसर मिले उसका भरपूर उपयोग करें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।
सडग त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः।।

हे अर्जुन! जो शास्त्र विहित कर्म करना कर्तव्य है–इसी भाव से आसक्ति और फल का त्याग करके किया जाता है–वही सात्त्विक त्याग माना गया है।।६।।

न द्वेष्टयकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः।।

जो मनुष्य अकुशल कर्म से तो द्वेष नहीं करता और कुशल कर्म में आसक्त नहीं होता–वह शुद्ध सत्त्वगुण से युक्त पुरुष संशयरहित, बुद्धिमान और सच्चा त्यागी है।।१०।।

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते।।

क्योंकि शरीर धारी किसी भी मनुष्य के द्वरा सम्पूर्णता से सब कर्मों का त्याग किया जाना शक्य नहीं हैं; इसलिये जो कर्म फल का त्यागी है, वही त्यागी है–यह कहा जाता है।।११।।

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्नयासिनां कचित्।।

कर्म फल का त्याग न करने वाले मनुष्यों के कर्मों का तो अच्छा, बुरा और मिला हुआ–ऐसे तीन प्रकार का फल मरने के पश्चात् अवश्य होता है, किन्तु कर्मफल का त्याग कर देने वाले मनुष्यों के कर्मों का फल किसी काल में भी नहीं होत।।१२।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 08 अगस्त से 14 अगस्त 2018 तक

अध्यक्षीय

सीख लेना चाहिए

घुप्प अंधेरे में, चारों ओर पानी से घिरी गुफा में, बिना सुविधाओं के १७ दिनों तक रहना कोई बच्चों का खेल नहीं है,लेकिन थाइलैंड के खिलाड़ी बच्चों और उनके कोच ने इस नामुमकिन लगने वाली बात को मुमकिन कर दिखाया है। थाइलैंड की चियांग राई प्रांत की इस गुफा से १२ बच्चों और उनके कोच को सुरक्षित बाहर निकालने में जुटी थाई नेवी सील ने अभियान की सफलता पर फेसबुक पर लिखा कि – हम नहीं जानते कि ये चमत्कार है, विज्ञान है या और क्या है। सभी १३ लोग अब गुफा से बाहर हैं। बचाव टीम का यह लिखना उसकी विनम्रता को दशार्ता है। वैसे वे भी यह जानते हैं कि इंसान की जिजीविषा से बढ़कर कोई चमत्कार इस दुनिया में नहीं है। २३ जून को जब ये बच्चे फुटबाल प्रैक्टिस के बाद इस गुफा में किसी सरप्राइंज पार्टी के लिए गए, तो वहां जिंदगी उनके लिए सरप्राइज लेकर खड़ी थी, उन्हें अंदाजा नहीं होगा कि बाहर इतनी बारिश होगी कि गुफा का प्रवेश द्वार बंद हो जाएगा और वे सब वहां फंस जाएंगे। इन बच्चों को खोजने की कोशिश अगले दिन से ही शुरू हो गई थी और ६ दिन बाद ब्रिटेन के दो गोताखोरों ने इन्हें ढूंढ निकाला। भूख, प्यास, ताज़ा हवा के बिना ये बच्चे बेहद कमजोर थे, लेकिन इनका हौसला कमजोर नहीं पड़ा। इनके जिंदा और सुरक्षित होने की खबर से राहत मिली, लेकिन अब अगली चुनौती पानी से भरे, बेहद संकरे और गहरे रास्ते को पार करने की थी। और गोताखोरों को प्रशिक्षित तैराकों पहुंचने में कम से कम पांच घंटे लग रहे थे और फिर बच्चों को लेकर लौटना और भी जोखिम भरा काम था, क्यों कि वे गोताखोरी नहींजानते थे। शारीरिक और मानसिक थकान के साथ लगातार ५–६ घंटे पानी में तैरना आसान नहीं होता। बारिश लगातार हो रही थी और गुफा के भीतर और वहां तक पहुंचने वाले रास्ते में पानी का स्तर बढ़ रहा था। पानी को पंप से निकालने की कोशिशें हुई, बारिश का मौसम खत्म होने तक इंतजार करने पर विचार हुआ, पर उसमें जोखिम ज्यादा था। क्योंकि गुफा में आक्सीजन स्तर कम हो रहा था और ऐसे में बच्चों की जान को खतरा था। इतनी सारी कठिनाइयों के बावजूद न फंसे हुए १३ लोगों ने हिम्मत छोड़ी, न इन्हें बचाने वालों ने। इस अभूतपूर्व मिशन में थाइलैंड का साथ देने दुनिया के कई देश आगे आए। लगभग ६० गोताखोरों ने ४३२ घंटों में इस कठिन काम को सफलतापूर्वक संपन्न किया। आसपास के लोगों ने भी इस मिशन में अपना योगदान दिया, उन्होंने बचाव कर्मियों के लिए भोजन की व्यवस्था की, उनके कपड़े धोए और माहौल को शांत, व्यवस्थित बनाए रखा। मीडिया भी सयंमित नजर आया और बेसिरपैर की खबरें ग्राउंड जीरो से लाइव देने की कोई होड़ नहींदिखी। पूरी दुनिया की नजरें बच्चों को बचाने के अभियान में लगी हुई थींऔर जैसे ही तीसरे दिन पूरी फुटबाल टीम के सुरक्षित बाहर आने की खबर आई, *डोनाल्ड ट्रंप, थेरेसा मे* जैसे वैश्विक नेताओं के बधाई के संदेश आ गए। चियांग राई प्रांत के गवर्नर नारोंगसक ओसोटानकोर्न ने अभियान में शामिल टीम को संयुक्त राष्ट्र टीम, कहा जो बिल्कुल मुनासिब है। इस टीम के सभी सदस्यों ने निस्वार्थ भाव से केवल बच्चों को बचाने के उद्देश्य से अपनी जान जोखिम में डालकर इस काम को पूरा किया है। इस तरह की घटनाएं यह साबित करती हैं कि दुनिया में स्वार्थी लोग हिंसा, आतंकवाद और लालच की चाहे जितनी अंधेरी गुफाएं बना लें, इन गुफाओं से मासूमों को बाहर निकालने वाले लोग हमेशा जीतेंगे। वैसे थाइलैंड में प्रकृति के बंधक बने बच्चे न अंधेरे से डरे, न सामने दिख रहे खतरों से विचलित हुए। ज़बकि भारत में अक्सर बच्चों को अनदेखे खतरों से अकारण डराया जाता रहता है। कभी अंधेरे का, कभी साधुबाबा के पकड़ लेने का तो कभी भूत–प्रेत का डर बचपन से बिठा दिया जाता है। थाइलैंड की इस घटना से भारतीय समाज को सीख लेने की जरूरत है, ताकि बच्चे काल्पनिक खतरों से भयभीत रहने की जगह वास्तविक खतरों से निपटना सीखें। और आखिर में एक बात इधर थाइलैंड से बच्चों को बाहर निकालने की खबर आई, उधर भारत की राजधानी दिल्ली में एक स्कूल में फीस न देने पर ५६ बच्चियों को बंधक बनाने की खबर आई। भूख–प्यास गर्मी से बेहाल इन बच्चियों ने जब घंटों बाद अपने मां–बाप को देखा तो वे बिलख उठीं। हमें भी अपने बच्चों को हर परिस्थति से लड़ने के लिए तैयार करना चाहिए। झूठी कहानियां सुनाकर उनको बचपन से ही कमजोर नहीं बनाना चाहिए।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

सच का सामना करना सीखें

हम कितने डरपोक, दब्बू और दोहरे चरित्र वाले समाज में जी रहे हैं। इसका ताजा उदाहरण आईएएस शाह फैसल के ट्वीट और उस पर अनुशासनात्मक कार्रवाई में देखा जा सकता है। २०१० में जब कश्मीर के शाह फैसल ने आईएएस में सर्वोच्च स्थान हासिल किया था, तो उन्हें आतंकवाद से जूझते, हताश कश्मीरी युवाओं के लिए उम्मीद की किरण के रूप में देखा गया था। लेकिन आज उन्हीं शाह फैसल की व्यंग्यात्मक टिप्पणी से सरकार को तकलीफ हो रही है। इस वक्त उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गए शाह फैसल ने बलात्कार की बढ़ती घटनाओं पर एक तंज भरा ट्वीट किया कि पितृसत्ता, जनसंख्या, निरक्षंरता, एल्कोहल, टेक्नोलॉजी, अराजकता, रेपिस्तान! उनके इस ट्वीट पर कई यूजर्स ने आपत्ति जताई। उन्हें शायद महान भारत देश के लिए यह कटाक्ष पसंद नहीं आया। लेकिन केंद्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग को भी यह ट्वीट नागवार गुजरा और उसने शाह फैसल को नोटिस जारी किया है। डीओपीटी के नोटिस के बाद राज्य महाप्रशासनिक विभाग ने फैसल को नोटिस भेजा कि आप कथित रूप से अपने आधिकारिक दायित्वों के निर्वहन में पूरी ईमानदारी और निष्ठा बनाए रखने में नाकामयाब हुए हैं और एक लोक सेवक के बतौर यह अनुचित व्यवहार है। इस नोटिस के बाद फैसल ने इसे सोशल मीडिया पर साझा किया और लिखा कि दक्षिण एशिया में बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के खिलाफ किए गए एक कटाक्ष भरे ट्वीट के खिलाफ मेरे बॉस की ओर से लव लेटर आया है। यही विडंबना है कि औपनिवेशिक भावना से बनाए गए सेवा नियमों के जरिये लोकतांत्रिक भारत में अपने मन की बात कहने की आजादी का गला घोंटा जा रहा है। फैसल ने यह भी साफ किया कि वे इसे इसलिए साझा कर रहे हैं क्योंकि वे नियमों में बदलाव लाने की जरूरत समझते हैं। फैसल का मानना है कि सरकार को आलोचनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए। शाह फैसल की बलात्कार के खिलाफ टिप्पणी केवल भारत नहीं बल्कि दक्षिण एशिया के लिए थी। और उन्होंने जो लिखा उसमें कुछ भी गलत नहीं है। अकेले भारत में बलात्कार की कितनी भयावह घटनाएं हाल में हो चुकी हैं। पितृसत्तात्मक समाज में लड़कों की गलत–सही हर बात को बढ़ावा मिलता है और लड़कियों से उनके जीने के, स्वतंत्रता के अधिकार छीने जाते हैं। लड़के की चाहत में दो से ज्यादा बच्चे पैदा करने और जनसंख्या बढ़ाने में कोई गुरेज नहीं होताए न ही कन्या भ्रूण हत्या करने में। शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी, तकनीकी के कारण अश्लील फिल्मों तक आसान पहुंच और लड़के होने का दंभ, इन सबके कारण बलात्कार जैसे अपराध बेखौफ किए जा रहे हैं। अगर हम इस सच्चाई से मुंह मोड़ते हैं तो लड़कियों के लिए माहौल थोड़ा और खतरनाक बना रहे हैं। लेकिन सरकार इस सच्चाई को शायद देखना नहीं चाहती। वह केवल बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा देकर अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। लेकिन यह नहीं देख रही कि बेटियों के लिए खतरा कितना बढ़ता जा रहा है। बलात्कार के खिलाफ केवल कानून बनाने या उसकी निंदा करने से तो उसे रोका नहीं जा सकता। उसके लिए सरकार और समाज को जागरूक होना पड़ेगा, लेकिन ऐसा करने की कोई इच्छा दिखाई नहीं देती। बलात्कार जैसे भयावह अपराधों को रोकने के लिए संवेदनशीलता चाहिए, लेकिन वह भी सिरे से नदारद दिखाई देती है। बलात्कार के कारणों की तलाश में भी सारा ठीकरा लड़कियों पर फोड़ा जाता है कभी उनके कपड़ों से तकलीफ होती है, कभी मोबाइल रखने से, कभी देर रात रात कर घर से बाहर रहने पर। लेकिन जब २ महीने की बच्ची से बलात्कार होता है। तब ये कारण कहां जाते हैं। अभी हाल में उत्तरप्रदेश के एक भाजपा विधायक ने कहा कि भगवान राम भी आ जाएं तो बलात्कार की घटनाएं नहीं रुक सकतीं। क्या ऐसी बदजुबानी करने वालों पर सरकार को कोई कार्यवाही नहीं करनी चाहिए। आईएएस शाह फैसल ने बलात्कार की घटनाओं पर संवेदनशीलता दिखाते हुए अगर कोई टिप्पणी की, तो इससे उनकी ईमानदारी और निष्ठा पर सवाल क्यों उठाए जा रहे हैं। बल्कि ऐसे आईना दिखाने वाले अधिकारियों की तो समाज और सरकार में जरूरत है, लेकिन अफसोस कि सरकार सच्चाई का आईना देखना ही नहींचाहती। उसे सच से डर लगता है, इसलिए वह जुमलों की आड़ लेती है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

मेथी के गुण अनेक

मेथी के छोटे-छोटे दानों में प्रोटीन, विटामिन-सी, नियासिन तथा पोटेशियम सरीखे तमाम पोषक तत्व होते हैं। मेथी के तमाम गुणों का उल्लेख किया गया है। मेथी रक्त को पतला करती है, मल को बांधती है, वात रोग, गठिया, अर्श, भूख न लगना, जल जाने, कब्ज तथा मधुमेह के मरीज के लिए मेथी अत्यधिक लाभकारी है। मेथी रक्त में ग्लूकोज तथा कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रित करती है।

✍ डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ–साथ अपने औषधीय गुणों की वजह से मेथी प्रत्येक घर की रसोई का खास भाग बन चुकी है। रसोईघर मं मेथी के बीज, मसाले की भांति प्रयोग किए जाते है, जिनको मेथीदाना कहते है, जो पीले व हरे रंग के होते है। मेथी के दानों का सबसे अधिक प्रयोग अचार के मसालों में होता है। मेथी के छोटे–छोटे दानों में प्रोटीन, विटामिन–सी, नियासिन तथा पोटेशियम सरीखे तमाम पोषक तत्व होते हैं।

मेथी, सब्जी में मसाले की तरह तो इस्तेमाल होती ही है, इसे अनाज और दालों की भाँति अंकुरित करके भी खाया जा सकता है। अंकुरित मेथी को नाश्ते में, दोपहर के भोजन में और रात के खाने में शामिल कर सकते हैं।

मेथी का साग भारत वर्ष में सर्वत्र रुचिपूर्वक खाया जाता है। हरी पत्तेदार सब्जियों में, मेथी में अधिक मात्रा में खनिज लवण जैसे कैल्शियम, आयरन तत्व आदि तथा विटामिन–सी, रिबोफ्लेविन, फॉलिक एसिड आदि प्राप्त होते है। मेथी की पौष्टिकता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि इसे कम तेल, मसालों में थोड़ी देर ही पकाया जाए, मेथी के सूखे पत्ते या कसूरी मेथी का प्रयोग सब्जी में स्वाद व सुगन्ध लाने के लिए किया जाता है।

मेथी का सेवन करते वक्त जरा–सी सतर्कता बरतने की जरूरत है। मेथी का अधिक मात्रा में इस्तेमाल घातक भी हो सकता है। इसके ज्यादा इस्तेमाल से त्वचा में खिंचाव, गैस आदि समस्याएं होती है। किसी और औषधि के साथ मेथी का इस्तेमाल उस औषधि के प्रभाव को रोकता है, अतः औषधि एवं मेथी खाने के समय में कम से कम दो घंटे का अतराल जरूर रखें। यदि महिला गर्भवती है, तो मेथी को चिकित्सक से परामर्श लेकर ही खाएँ।

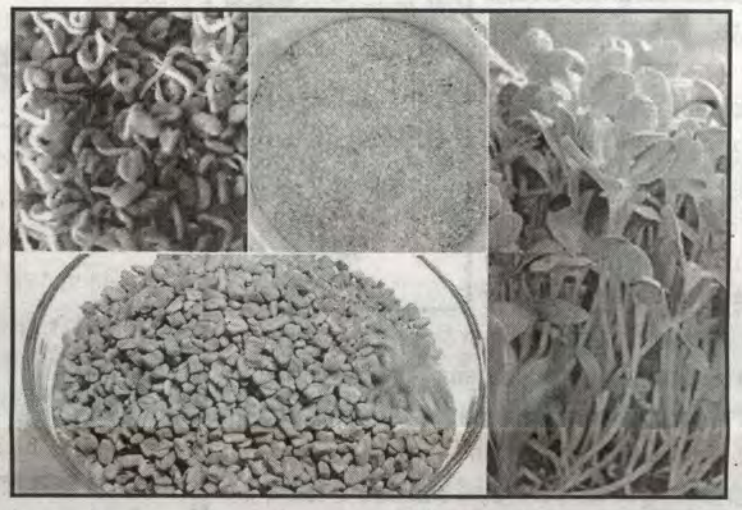

मेथी का इस्तेमाल तमाम व्याधियों से बचाता है। आयुर्वेद में मेथी के तमाम गुणों का उल्लेख किया गया है। मेथी रक्त को पतला करती है। मल को बांधती है। वात रोग, गठिया, अर्श, भूख न लगना, जल जाने, कब्ज तथा मधुमेह के मरीज के लिए मेथी अत्यधिक लाभकारी है। वैज्ञानिक शोधों में भी यह बात उभर कर आई है कि मेथी रक्त में ग्लूकोज तथा कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रित करती है। इसका निरंतर सेवन मधुमेह मरीजों के लिए भी मुफीद माना गया है। एक शोध से यह बात उजागर हुई है कि नित्यप्रति मेथी का सेवन करने से दो वर्ष में अपने कोलेस्ट्रॉल के स्तर को १४ प्रतिशत कम कर सकते हैं। जिससे दिल के दौरे का जोखिम २५ प्रतिशत तक कम हो जाएगा। अगर खाने में मेथी का उपयोग नीं कर पाएँ, तो इसे जल के साथ औषधि के रूप में भी ले सकते है।

मेथी के कुछ औषधीय उपयोग : प्रतिदिन निराहारमुख एक चम्मच मेथीदाने के चूर्ण को पानी के साथ सेवन करने से कब्ज और घुटने की पीड़ा से राहत मिलती है। अस्थमा, टीबी बीमारियों में एक चम्मच अदरक का रस, एक कम मेथी को उबालकर उसको छानकर थोड़ा शहद मिलाकर पीना चाहिए। यदि सिर में रूसी हो गई हो, तो मेथी के कुछ दाने थोडे से पानी में रातभर के लिए भिगों दें। सुबह इसे पीसकर नीबू के रस में मिलाकर लेप बना लें। इस लेप को सिर पर एक घंटा लगाने के बाद धो लें, नर्म और निखरी हुई त्वचा के लिए मेथी पीसकर दूध में मिलाकर चेहरे पर लगाएँ और २० मिनट बाद धो लें।

चिचिंडे को चीरकर उसमें मेथी के दानें भरकर धागे से बाँध ा दीजिए, दो दिन में मेथी के अंकुर फूट चुके होंगे,

उनको और पूरे चिचिंडे को पीसकर कच्चे दूध के साथ सिर पर लेप लें। एक घंटे बाद सिर धो लें। इससे सफेद बालों की रोकथाम हो सकती है तथा बालों का झड़ना भी रूक जाता है। मेथी की पत्तियों को पीसकर पतला लेप बनाएँ। इस लेप को रूई की सहायता से चेहरे पर जहाँ दाग–धब्बे हो, वहाँ लगा लें, एक घंटे बाद ताजे पानी से चेहरा साफ कर लें।

मेथी के दाने मधुमेह में अधिक लाभकारी होते है। रायते में मेथी का बघार देकर खाया जा सकता शेष पृष्ठ 11 पर

विटामिन की कमी से होने वाले रोग

अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि हमारे शरीर को सभी पोषक तत्त्वों की प्राप्ति होती रहे। पोषक तत्त्वों में विटामिन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और विटामिनों की कमी से शरीर कई रोगों से ग्रस्त हो जाता है। इसलिए विटामिनों का उचित मात्रा में सेवन बहुत जरूरी है।

विटामिन 'ए' : स्वस्थ आँखों व स्वस्थ त्वचा, दोनों के लिए इसकी आवश्यकता होती है। विटामिन 'ए' इन्फैक्शन से शरीर को सुरक्षा देता है। विटामिन 'ए' की कमी से त्वचा रूखी व आभाहीन हो जाती है। विटामिन 'ए' आवश्यक मात्रा में न लेने से आँखों के कई रोग हो सकते हैं। इसलिए विटामिन 'ए' का सेवन अपने आहार में अवश्य करें। हरी सब्जियाँ जैसे पालक, ब्रंगोभी, गाजर, टमाटर, सीताफल आदि का सेवन करें। संतरा, मौसमी, खरबूजा में विटामिन 'ए' भरपूर मात्रा में होता है। दूध, मक्खन, पनीर, अंडे, मछली के तेल में भी विटामिन 'ए' पाया जाता है।

विटामिन 'बी' : विटामिन 'बी' की कमी अगर शरीर में हो जाए तो त्वचा संबंधी रोग, बेरी–बेरी व नर्वस डिस्आर्डर हो सकते हैं। विटामिन 'बी' काम्पलेक्स, गेहूँ, साबुत अनाज, दाल, अंकुरित चने, हरी सब्जियाँ, खमीर में पाया जाता है। विटामिन 'बी' भूख को बढ़ाता है और मांसपेशियों के स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है।

विटामिन 'सी' : इस विटामिन की आवश्यकता हमारे शरीर को प्रतिदिन होती है। इसका कारण यह है कि यह विटामिन हमारा शरीर स्टोर नहीं करता। विटामिन 'सी' की कमी से स्कर्वी नामक रोग हो जाता है। विटामिन 'सी' शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है। कई शोधों से सामने आया है कि विटामिन 'सी' व 'ई' हृदय रोगों की संभावना को भी कम करते हैं। प्रतिदिन एक रसीले फल का सेवन करें। संतरा, नींबू, मौसमी, टमाटर, आम, पपीता, स्ट्राबेरी, अमरूद इसके अच्छे स्रोत हैं।

विटामिन 'डी' : हड्डियों की निर्माण प्रक्रिया और स्वस्थ दाँतों के लिए विटामिन 'डी' बेहद आवश्यक है। इसकी कमी से हड्डियों की बीमारी रिकेट्स हो जाती है। इसे पर्याप्त मात्रा में लेना आवश्यक है। सूर्य की धूप, अंडे, मछली का तेल, दूध इसके अच्छे स्रोत हैं।

विटामिन 'ई' : विटामिन 'ई' शरीर की सेल प्रक्रिया को सुरक्षा देता है और सेल्स को नष्ट होने से बचाता है। विटामिन 'ई' के अच्छे स्रोत हैं कीवी, दूध, अनाज, अंडे का पीला भाग आदि। हर विटामिन हमारे शरीर में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, इसलिए इनको सही मात्रा में लेना अति आवश्यक है।

बाल बहुत झड़ते हैं

प्रश्न– मेरे बाल बहुत लंबे और घने हैं, पर पिछले कुछ समय से लगातार झड़ रहे हैं। क्या खान-पान का असर भी बालों पर पड़ता है? बालों की चमक भी लगातार फीकी पड़ रही है। कृपया बताएँ, मैं क्या करूँ?

उत्तर : बालों का गिरना कई बातों पर निर्भर करता है। कई बार मौसम के कारण भी बाल कुछ समय के लिए झड़ रहे होते हैं। कुछ बीमारियों के असर और हार्मोन संबंधित अनियमितता के कारण भी बाल झड़ सकते हैं। शुरूआत में आप बालों की देखभाल और सही खान–पान पर ध्यान दें। अपने आहार में नियमित रूप से अंकुरित मूँग की दाल शामिल करें। ताजे फल, कच्चा सलाद, हरी सब्जियाँ, साबूत अनाज और दही का सेवन भी बालों के लिए अच्छा रहता है। यदि बालों की प्रकृति तैलीय है या आपको रूसी है तो खूब पानी पिएँ। सुबह की शुरूआत पानी में नींबू के रस के साथ करें। जंक फूड का सेवन बिल्कुल कम कर दें। प्रोटीनयुक्त चीजों का सेवन करें जैसे सोयाबीन, घर का निकला पनीर, बींस और योगर्ट को आहार में शामिल करें। बालों की जड़ों में एलोवेरा जैल लगाएँ। आँवला, रीठा, महाभृंगराज का तेल, त्रिफला, बेल, नीम को भी बालों की सेहत के लिए अच्छा माना जाता है। बाल यदि झड़ रहे हैं तो ब्राह्मी को भी अच्छा माना जाता है। इससे बालों की जड़ों को उचित पोषण मिलता है।

नाम के आगे उपजाति वाचक शब्द मानव समाज को बांट रहा है उपजातिवाचक शब्द हटाने में आगे आऐं

✍ पं० उम्मेद सिंह विशारद

आत्मा की आवाज

ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि में सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों की प्रथम प्रथक रचना की है जो जन्म से मृत्यु तक आकृतियां एक जैसी बनी रहती हैं। तथा उन्हीं में से एक मनुष्य जाति का निर्माण भी किया है, और जीवित रहने के साधन सबको एक समान बिना भेद भाव के उपलब्ध करायें है। अर्थात मनुष्य की एक जाति मनुष्य जाति बनाई है।

मनुष्य के पूर्वजों ने मनुष्यों की योग्यतानुसार गुण कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बिना भेद भाव के बनाई थी। कलान्तर में वर्ण व्यवस्था कल्पित जाति व्यवस्था कायम करके मनुष्य जाति को बांट दिया है। आज का लेख इस आवश्यक विषय पर प्रस्तुत कर रहा हूं निष्पक्ष होकर विचार करें।

वर्ण व्यवस्था कर्म से भी तथा कथित जाति से नहीं थी

मानव पूर्व जन्मों के संस्कारों को लेकर पैदा होता है और वर्तमान में संस्कार व स्वभाव से एक विशेष गुण वाला हो जाता है, और उस गुण कर्म कों वर्ण "संज्ञा" दी जाति है। वर्ण अधिक ज्ञान विज्ञान प्राप्त करके बदले जा सकते हैं, तथा बदल गये है। हमारे ग्रंथों में इसके अनेक प्रमाण हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों को एक समान पैदा किया है। वैदिक धर्म व वेदों में व्यवस्था थी कि जो जिस–जिस गुणों को लेकर पैदा होता है, राज्य व्यवस्था से उसको वहीं वर्ण मिलता था। जैसे एक पिता की चार सन्ताने हुई और उनमें से एक पढ़ने में तीव्र बुद्धि उसको ब्रह्ममण, दूसरा लड़ने में वीरता उसको क्षत्रि तीसरा व्यापार में तीव्र बुद्धि उसको वैश्य चतुर्थ सन्तान जो पढ़ने से व समझाने से मन्द बुद्धि हैं, उसको शुद्र का वर्ण दिया जाता था। शुद्र घर का कार्य व भोजन आदि बनाया करता था, किन्तु भेद भाव नहीं होता था। इस प्रकार वर्ण गुण कर्मानुसार बदलते रहते थे।

नाम के आगे प्रचलित उपजातिवाचक शब्द की

समीक्षा

महाभारत युद्ध के बाद जब वैदिक विद्वान समाप्त हो गये, तब वर्ण शंकरसन्ताने पैदा होने लगी, और सामाजिक गुण कर्म वर्ण व्यवस्था धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। और गुण कर्म के कार्यों को जाति व्यवस्था बनने लगी। और मानव समाज में ऊंच नीच और छुआछूत का व्यवहार होने लगा। सत्योपदेश ब्रह्ममणों से संसर्ग न रहने से लोक अव्यवस्था फैल गई। मानव समाज में मूल में पोन्ड्रक, ओड, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पद्दव, चीन, किरात, दरद, खश, आदि के नाम से प्रचलित हुई और संसार में जहां भी बसी वही अपना आधिपत्य जमा कर बैठ गई। जैसे द्रविड भारत के दक्षिण में यवन, शक, पारद, पश्चिम में जाकर अरब राष्ट्रों को बनाया, इसके लिये प्रमाण रूप में ईरान के शाह अपने नाम से पूर्व (आर्य मिहर) शब्द लिखते हैं, जिसका अर्थ हैं आर्य कुल का सूर्य–१

इस प्रकार नागा भारत के असम क्षेत्र में जा बसे और शेष विश्व में जहां तहां आबाद हो गये। वह एक युग था विश्व के हर कोने में आग्र निवास करते थे, और भारत उनका केन्द्र था। किन्तु स्वार्थी लोगों ने द्रविड और आर्यों की अलग–अलग जाति बताकर सदा के लिये भारतीयों के दिलों में दरारे डाल दी। भारत में प्रचलित जातियों का मूल द्रविड और आर्य है इसे ही सब उपजाति फैली हुई है। नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाने से ऊंच नीच का व्यर्थ भेदभाव पनपता है, जबकि उपजाति का कोई निश्चित आधार नहीं हैं न ही प्राचीन इतिहास मिलता है। जाति वाचक शब्द लगाने वाले मनुष्य को यह भी मालूम नहीं होता कि इस उप जाति नाम का मूल क्या है, और कैसे नाम पड़ा बस, पीढ़ी दर पीढ़ी दर पीढ़ी उपनाम लगाना परम्परा बन गई है। गम्भीरता से विचार करें।

जातिवाद से हानियां

उच्च जाति मानने से भेदभाव, ऊंच नीच व्यवहार से भारत वर्ष में बहुत हानियां हुई हैं। तथा कथित छोटी जाति का उच्च जाति वालों द्वारा पीढ़ी बधुंवा की तरह शोषण किया गया, और शोषित वर्ग को प्रत्येक अधिकारी से वंचित किया गया, इससे दुखी होकर सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिये विधर्मी बन गये। ईसाई व मुसलमान समुदाय में सम्मलित हो गये। फल स्वरूप भारत वर्ष में आज भी करोड़ो ईसाई व मुसलमानों के पूर्वज हिन्दु थे। आज के इस वैज्ञानिक वातावरण में भी जाति पांति, छुआ छुत का चलन कैंसर बना हुआ है।

वर्तमान युग में जाति पाति छुआ छुत का कोई औदिच्य नहीं है

आज तक जिन व्यवसाय के कारण भिन्न–भिन्न जाति जैसे लोहार, टमटा, मिस्त्री, औजी आदि को छोटी जाति का माना जाता था। किन्तु अब उनके व्यवसाय को उच्च वर्ग के लोग करने लगे हैं। अब उच्च वर्ग को भेदभाव समाप्त करने में आगे आना चाहिए। इस विषय पर उदाहरण देना प्रासंगिक होगा। जो इस प्रकार से है। एक दिन रेल के डिब्बे में खादी की टोपी व धोती पहने समाज सुधारक जे.पी. कृपलानी सफर कर रहे थे, और उसी डिब्बे में एक तिलक धारी पंडित जी भी बैठे थे। श्री जे.पी. कृपलानी जी ने अपना खाने का टिफन खोला आसर शिष्टाचार बस उन तिलक धारी पंडित जी से भी भोजन करने को कहा, किन्तु पंडित जी ने कहा महाशय आपकी जाति क्या है। कृपलानी जी मुस्कराने लगे, और कुछ सोच कर बोले पंडित जी मेरी एक जाति हो तो बताऊं। पंडित बोले क्या मतलब है। कृपलानी जी मुस्कराकर बोले प्रातः जब शौचालय जाता हूं और अपने को साफ करता हूं उस समय भंगी बन जाता हूं, दाढ़ी बनाते समय नाई, नहाने के बाद वस्त्र धोने से धोबी, पानी भरते समय कहार, हिसाब करते समय वैश्य, विद्यालय पढ़ाते समय ब्रह्ममण, किसी पर अन्याय को बचाते समय क्षत्रीय बन जाता हूं। अब आप ही बताइये मैं अपनी कौन सी जाति बताऊं। किन्तु ईश्वर ने मनुष्य जाति का बनाया है। इसलिए मेरी जाति मनुष्य हैं अब आप ही विचार करें।

ईश्वर कृत जातियां

ईश्वर ने करोड़ो प्राणियों की रचना भिन्न–भिन्न शरीरों में रची हैं, जो शरीर जिस प्राणी को दिया है वह जन्म से मृत्यु तक बना रहता है जैसे, गाय, भैंस, बकरी, कबूतर, घोड़ा, गधा, सांप, पशु–पक्षी, बिच्छु आदि शरीरों की अलग–अलग रचना की है। वैसे ही एक जाति मनुष्य की भी बनाई है। जाति उसको कहते है, जो जन्म से मृत्यु तक जाति नहीं है। किन्तु शास्त्रों में मानव जाति में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था बनाई है, किन्तु भेदभाव नहीं बनाया हैं जो हम पहले पैराग्राफ में स्पष्ट कर चुके हैं।

आर्य समाज संगठन समाज सुधारक संस्था से निवेदन

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कथित जाति व्यवस्था को मानव जाति में फूट डालने वाला बनाया है। और वर्ण व्यवस्था पर बल दिया है। आज आर्य समाज को बने करीब १४२ वर्ष हो गये हैं, किन्तु आर्य सदस्य, व आर्य नेतृत्व नेतागण, अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाते जा रहे है। जो जाति व्यवस्था को और मजबूत कर रहा है। यदि आर्य समाज संगठन से जुड़े आर्य अपने नाम के आगे जाति वाचक शब्द हटाने में आगे आये तो मानव समाज को बहुत बड़ा सन्देश जायेगा।

भारतीयों (हिन्दुओं) को जागना ही होगा

१. भारत की गुलामी का कारण एक जाति वाद द्वारा आपसी फूट व अलगाव वाद व राष्ट्र की उपेक्षा का कारण रहा है। फिर भी हम भारतीय चैत नहीं रहे है।

२. भारत वर्ष में करीब २१ करोड़ मुसलमान व ईसाई है, जिनमें इनके पूर्वज अधिकांश हिन्दु थे। यही अवस्था रही तो कालान्तर में हिन्दु अपने ही देश में अल्प संख्यक हो सकते है। फिर भी चैत नहीं रहे है।

३. जातिवाद की बीमारी का लाइलाज का कारण वर्तमान राजनीति भी बनी हुई है। जो वोट बैंक के लालच में दिनो–दिनो बढ़ रही है। फिर भी हम चैत नहीं रहे है।

४. हिन्दुओं के धर्मों में पाखण्डी धर्म सम्प्रदाय भारत में दिनो–दिन बढ़ रहे है और इनकेक कारनामे हमारे सामने शेष पृष्ठ 11 पर

सैन्य अभ्यास करेंगे भारत-पाक

पहली बार धुर विरोधी देश भारत और पाकिस्तान एक साथ युद्ध अभ्यास करेंगे।

प्रतिक्रिया

१. यह समाचार पढ़कर आश्चर्य एवं खेद हुआ।

२. जो गलत काम कांग्रेस ने नहीं किया किन्तु अब उसे भाजपा करने जा रही है।

३. ७० वर्षों से पाकिस्तान हमारे साथ शत्रुता पूर्ण व्यावहार कर रहा है।

४. उसने हमारी २८००० वर्ग मील भूमि पर अवैध कब्जा कर रखा है।

५. पाकिस्तान में हिन्दू लड़कियों का अपहरण और जर्बदस्ती धर्म बदलकर मुस्लिम युवकों से निकाह/ शादी करा दी जाती है।

६. कांग्रेस के रास्ते पर चलते हुए मोदी सरकार ने अल्पसंख्यक (मुस्लिम–ईसाई आदि) कल्याण मंत्रालय तो बना रखा है जो करोड़ों–अरबों रुपए मुस्लिमों पर प्रति वर्ष सरकार के व्यय कर रहा है लेकिन ७० वर्षों में किसी पार्टी ने बहुसंख्यक (हिन्दू) कल्याण मंत्री नहीं बनाया है। यह हिन्दू का दुर्भाग्य है।

७. हमारी मांग है कि शत्रु देश के साथ सैन्य अभ्यास का कार्यक्रम रद्द कर दिया जाए।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और समाज

✍ डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय

जिस प्रकार शरीर की उन्नति जलवायु, भोजन, प्रकाश इत्यादि पर निर्भर है उसी प्रकार सभ्य समाज की प्रगति शिक्षा पर अवलम्बित है। मानव मस्तिष्क और ज्ञान के प्रसार का माध्यम शिक्षा है। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने शिक्षा रूपी संसाधन के उद्देश्यों को प्रतिपादित करते हुए ज्ञानदायक शिक्षा और विज्ञानवर्द्धक शिक्षा के रूप में विभक्त कर दोनों की समान रूप से आवश्यकता पर बल दिया है। इसीलिए कहा भी गया है–

''शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा यस्तु क्रियावान् पुरुषः
सुचिन्तितं चौषधमातुराणां न नाममात्रेण करोत्यरोगम्।।''
(हितोपदेश–१/१७१)

शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा मानव के सर्वांगीण विकास का प्रयत्न किया जाता है, जिससे मानव आत्माभ्युदय को प्राप्त करता हुआ स्वयं के भरण–पोषण के साथ आश्रितों को संरक्षण प्रदान करता हुआ समाज संरचना में सराहनीय योगदान दे सके। शिक्षा वह है जिससे हमारे सांस्कृतिक गौरव में वृद्धि हो और हमारी सामाजिक चेतना विकसित हो सके। मानव के व्यवहार–परिवर्तन में शिक्षा का अभूतपूर्व योगदान है। यदि यह कहा जाये कि शिक्षा ही जीवन है और जीवन ही शिक्षा है, तो अत्युक्ति न होगी। शिक्षा के द्वारा हमें ज्ञान की उस विधा का ज्ञान होता है, जिसमें व्यक्ति के वैयक्तिक गुणों की अभिवृद्धि के साथ–साथ उसके सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक कर्तव्यों का भी निर्धारण होता है। शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं के विकास में सहायक है, जो उसे पर्यावरण पर नियंत्रण रखने और अपनी सम्भावनाओं की पूर्ति हेतु सामर्थ्य प्रदान करती है।

भारत में अंग्रेजों के शासनकाल में जिस शिक्षा–प्रणाली को अपनाया गया, उसका पर्याप्त प्रभाव हमारे समाज में परिलक्षित होता है। इस प्रभाव का दुष्परिणाम है कि रोजगारपरक आधुनिक शिक्षा ने ज्ञान के प्रकाश को दूर कर दिया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बढ़ते हुए प्रभाव के फलस्वरूप हमारी सोच में भारी परिवर्तन हुआ है और यह परिवर्तन का चक्र निरन्तर गतिशील है। यह सत्य है कि एडम्स और जॉन डीवी द्वारा प्रतिपादित द्विमुखी एवं त्रिमुखी शिक्षण–प्रक्रिया का अंकुरण उपनिषदों में ही निहित है। कार्यानुभव की पद्धति से सम्वेष्टि होने के पश्चात् भी ज्ञान की प्रधानता के कारण बौद्धिक–विकास की ओर अधिक ध्यान दिया गया। परिणामतः शिक्षण की प्रारम्भिक प्रक्रिया पर ही आधारित थी। इसका सम्भावित कारण प्रतीत होता है कि जीविकोपार्जन के साधन तब पैतृक वंशानुक्रम के द्वारा प्राप्त होते थे। लेकिन आज परिस्थितियाँ भिन्न हैं। व्यावसायिक प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व भी विद्यालयों पर आ पड़ा है। प्रत्येक क्षेत्र में विशेषज्ञता की माँग की जा रही है। वर्तमान में इन आवश्यकताओं की पूर्ति–हेतु प्रत्येक छोटे–बड़े शहरों में व्यावसायिक शिक्षा के नाम पर नित्य नये संस्थान खोले जा रहे हैं, जिनमें व्यावसायिक प्रशिक्षण तो क्या सामान्य शिक्षण का भी उचित प्रबन्ध नहीं है। उच्च शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के मानकों में भी दिन–प्रतिदिन गिरावट आती जा रही है। वहाँ से निकले हुए विद्यार्थी न तो व्यावसायिक दृष्टि से ही सफल हो पा रहे हैं और न ही जीवन मूल्यों को ही आत्मसात् कर पा रहे हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ४.१ अर्थात् भ्मंकए भ्दकए भ्मंतज एवं भ्मंसजी को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है, फिर भी स्थिति यथावत् बनी हुई है।

'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है', इस आधार पर शिक्षाविदों ने ज्ञान और व्यावसायिक पक्ष के साथ–साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान को भी अधिगम प्रणाली में समाहित किया है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेश को अपने जीवन में समाहित करते हुए समाज में पथ–प्रदर्शक की भूमिका का निर्वाह करने वाले महात्मा गाँधी ने अधिगम के क्षेत्र में बुनियादी शिक्षा को अपनाने का सुझाव दिया था। उनका कथन था कि मात्र अक्षरबोध से मानव का अभ्युदय सम्भव नहीं है। इसके लिए आत्मनिर्भरता तथा सम्बन्धित नैसर्गिक गुणानुसार मानव–शिशु को कार्यानुभव प्रणाली द्वारा प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, तभी शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त कर पायेगी। शिक्षा के क्षेत्र में गाँधी जी के इस सुझाव को महत्त्व प्रदान करते हुए आचार्य जे.बी. कृपलानी ने कहा था कि शिक्षा के इस स्वरूप में बालक हाथ से काम करने वाले व्यक्तियों को सम्मान की दृष्टि से देखता है और हस्तश्रम का महत्त्व समझता है। यह दुःख का विषय है कि हमारे देश में आज भी मानसिक कार्य को श्रेष्ठ और हस्त कार्य को निकृष्ट समझा जाता है। इस प्रकार के विचार और भेदभाव जनतन्त्रवादी संस्थाओं के वर्धन एवं विकास में बाधा उपस्थित करते हैं।

जीवन के प्रारम्भ में मनुष्य जिन विचारों को ग्रहण करता है, जिस प्रकार के वातावरण में रहता है, उन्हें छोड़ना कठिन होता है। वास्तविकता तो यह है कि हमने अन्य विषयों को तो पढ़ाया, पर राष्ट्रीयता का पाठ नहीं पढ़ाया। परिणामस्वरूप विद्यार्थी ऊँचे पद तो प्राप्त कर लेता है; लेकिन उचित–अनुचित की चिन्ता किये बिना ही अनुचित विचारों का पक्ष लेता है। समाज की इस चिन्तनीय स्थिति की न केवल विचार करने की, अपितु समर्थक प्रतिकार करने की भी आवश्यकता है। देश की भावी पीढ़ी को राष्ट्रीय विचारों से दीक्षित किये बिना इस बुराई से निजात पाना असम्भव है। यही भौतिकवाद मानव को दोहरी जिन्दगी जीने को मजबूर करता है। पाश्चात्य जीवन दर्शन ने हमारे जीवन को भौतिक सुख–सुविधाओं से सम्पन्न तो अवश्य बनाया है; लेकिन शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को पूर्णतः नष्ट कर दिया है। इन कम्पनियों ने आर्थिक चिन्तन को सर्वाधिक महत्त्व दिया है, जिसके कारण सरकार, समाज, शिक्षण–संस्थाएँ सभी शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य अर्थोपार्जन समझने लगी हैं। नित्य नवीन शिक्षण संस्थाएँ खोली जा रही हैं और उनमें पढ़ने वालों की योग्यता भी अर्थोपार्जन तक सीमित है। इन कम्पनियों की मान्यता है कि जो धनोपार्जन की सामर्थ्य नहीं रखते, उनका पठन–पाठन व्यर्थ है!

इनकी दृष्टि में भाषा, साहित्य, व्याकरण, दर्शनादि विषय जिनके पढ़ने से आर्थिक लाभ सम्भव नहीं, उन विषयों को पाठ्यक्रम से निकाल देना चाहिए। जिन विषयों के माध्यम से आर्थिक लाभ की संभावना हो केवल वही विषय पढ़ाये जाने चाहिए। इस प्रकार का चिन्तन समाज में विकृतियों को बढ़ा रहा है। अत्यधिक धन की लालसा में व्यक्ति विचारशून्य होता जा रहा है। भारत का गौरवशाली अतीत इस बात का साक्षी है कि प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य मानव में कष्ट सहन करने की सामर्थ्य उत्पन्न करना एवं बौद्धिक बल से विवेक उत्पन्न करना होता था; लेकिन भौतिकवादी दृष्टिकोण ने शिक्षा के इन दोनों उद्देश्यों को पूर्णतः नष्ट कर दिया। निःसन्देह आज विद्यालय के भवन भव्यता की पराकाष्ठा को प्राप्त कर रहे हैं; लेकिन छात्रों में विवेक, योग्यता, सहिष्णुता आदि गुणों की कमी होती जा रही है। बच्चों के स्कूल वातानुकूलित बनाये जा रहे हैं लेकिन क्या समाज सारे काम के साधनों को वातानुकूलन की सुविधा से सम्पन्न कर सकता है। वास्तव में हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए, जो समाज के अनुरूप हो, राष्ट्र के उत्थान में सहायक हो और मनुष्य को संघर्षशील और विवेकी बनाये। सम्प्रति प्रायः प्रतिदिन ही छात्रों के द्वारा आत्महत्या के समाचार सुनाई देते हैं। छात्र अनुचित तथा अनैतिक साधनों के द्वारा जीवन यापन करते भी देखे जा रहे हैं। इस प्रकार यह कहा

शेष पृष्ठ 11 पर

वन्दे मातरम कहना होगा

भारत में रहना है तो अब
वन्दे मातरम् को कहना होगा
गाँधी जी के गाल नही हमारे अब
शिवा बन कर विश्व को दिखाना होगा
भारत माता की जय हो
अब प्रत्येक जन से कहलाना होगा
सेना पर पत्थर बरसाये जो
उसे फासी पर लटकाना होगा
आंतकी को बिरयानी नही अब
बन्दूक की गोली को खिलाना होगा
तिरंगे का सम्मान करे ना जो
उसे अब भारत से जाना होगा
आंतकी के मरने पर दुःख प्रकट करे जो
उसे भी फासी पर झुलाना होगा
नेहरू, गाँधी जी नही अब
गुरू गोविन्द सिंह बन कर दिखलाना होगा
भारत बने पुन अखण्ड भारत
ऐसा कुछ कर दिखलाना होगा

पीयूष अरोड़ा

लिंगायत पन्थ को हिन्दू समाज से पृथक करने के लिए कांग्रेस का अंतर्राष्ट्रीय और घातक षड्यंत्र

✍ सर्वेश चन्द्र द्विवेदी

भारत देश पिछले १२०० वर्षों से विभाजनकारी राजनीति के दंश को झेल रहा है। पहले हिन्दू राजा आपस में लड़ते रहे, फिर विदेशी आक्रमणकारियों ने लूटा व समाज को विभाजित कर एक–दूसरे से लड़वाया तथा राज्य किया। इसमें मुगलकाल तदुपरान्त ब्रिटिशकाल प्रमुख रहा। अंग्रेजों की स्पष्ट नीति रही समाज व देश को बाँटो व संस्कृति को नष्ट करो तथा राज्य करो। इसका परिणाम हिन्दू समाज में ही कई सम्प्रदायों को एक–दूसरे के विरुद्ध खड़ा किया गया। पहले हिन्दू सवर्ण व हिन्दू दलित को बाँटने का प्रयास किया गया, फिर हिन्दू–मुसलमानों को बाँटकर देश का बँटवारा करा दिया। १९३२ में कम्युनल एवार्ड लाया गया, जिसमें मुसलमान व दलितों को अलग वोट डालने की व्यवस्था थी, जिसका विरोध गाँधीजी ने किया। पूनावैक्ट हुआ, दलित आरक्षण हुआ, इससे स्पष्ट होता है कि राजनैतिक हित लाभ के लिए ही हिन्दू समाज को बाँटने का कार्य देश आजाद होने के बाद भी कांग्रेस की सरकारों ने साम्यवादियों के वर्ग–संघर्ष की नीति को अपनाकर किया। इसके परिणामस्वरूप बैकवर्ड व अनुसूचित जातियों तथा सवर्णों में उठापटक शुरू हुई। रामकृष्ण सम्प्रदाय व राधा स्वामी सम्प्रदाय जैसों को भी अल्पसंख्यक दर्जा हेतु प्रेरित करना, कर्नाटक में लिंगायत को प्रदेश के चुनाव से पूर्व अलग पन्थ कहना; अल्पसंख्यक हित देने के नाम पर मूल हिन्दू दर्शन से ओतप्रोत लिंगायत को हिन्दुओं से अलग कराने का कार्य, उसे अमलीजामा पहनाने हेतु सेवानिवृत्त न्यायाधीश एच.एन. नागमोहनदास, देवगौड़ा, कमेटी का गठन दिसम्बर, २०१७ में कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने किया, जिसमें कुल सात सदस्य थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था, जो संविधान की मूल अवधारणा तथा हिन्दू जीवन दर्शन का जानकार हो। मा. सर्वोच्च न्यायालय ने हिन्दू दर्शन पर अपना विस्तृत निर्णय दिया है। इसके बावजूद राजनैतिक हितों के लिए वामपंथी व पश्चिमी पन्थवाद के पोषक सदस्यों ने सरकार व अपनी बदनीयती से कार्य करके आख्या प्रस्तुत की।

राजनीति में लिंगायत व वोक्कालिंगा, दक्षिणी कर्नाटक व उससे लगे राज्य तेलंगाना आन्ध्र

के कुछ भाग तथा पूरे कर्नाटक में इनकी प्रभावी संख्या लगभग १८ प्रतिशत है। महाराष्ट्र में भी इनकी कुछ संख्या है। भारतीय सनातन हिन्दू दर्शन में शैव, शाक्त, गाणपत्य, वैष्णव, जैन, बौद्ध, प्राकृत, गुरुग्रन्थ मत सिक्ख आदि हैं। शास्त्रों में वर्णन है कि कलियुग में नाना पन्थ होंगे। इसमें उपासना का आधार तथा खानपान व सदाचार आदि इन पन्थों के लिए विशेष महत्त्व के होंगे। हम विचार करें तो शास्त्रों में विश्व पटल पर भारत को देवभूमि व कर्मभूमि कहा गया तथा पूरा विश्व भोग भूमि कहा गया। कर्म का सम्बन्ध धर्म से है भोग का सम्बन्ध नैतिक–अनैतिक भोग से है। सृष्टि काल से सनातन धर्म हिन्दू संस्कृति में वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, अरण्यक, व्याकरण आदि के साथ ही इतिहास व विज्ञान को समझने के लिए पुराण का बड़ा महत्त्व है।

शिवपुराण में भगवान शिव को आदि ब्रह्म माना है, उनको लिंग स्वरूप माना है, जिसके विस्तृत अर्थ हैं। उन्हीं से सम्पूर्ण सृष्टि का प्राकट्य पुरुष उसका ही दृश्य मान लिंग रूप है। लिंगायत समाज सात्विक जीवन तथा सनातन हिन्दू की मूल अवधारणा का ही पोषक है। समय–समय पर योगी, ऋषि–मुनि शिव को शब्द ब्रह्म स्वरूप मानते हैं। अतः १२वीं से १६वीं सदी में जिन योगी–यती–ऋषियों ने समाज को जो वचन दिये, इनमें सबसे प्रसिद्ध नाम कर्नाटक में वासव जी का है, जिन्होंने ऐसे आध्यात्मिक समाज को दिशा दी, जिसमें जाति पन्थ व स्त्री–पुरुष का भेदभाव न रहे। कर्मकाण्ड का विरोध, मानसिक पवित्रता, भक्ति व सच्चाई पर विशेष बल दिया। एक ईश्वर उपासना, पूजा ध्यान पद्धति में सरलता लाने का प्रयत्न ज्ञान भक्ति व कर्म योग तीनों को मान्य अन्तर जातीय विवाह को प्रेरित किया। सभी जातियों के हिन्दू उनके अनुयायी हुए। इन्हें वीरशैव भी कहा गया। यह सम्प्रदाय शक्ति विशिष्टाद्वैत कहलाता है। जबकि मूलतः अद्वैतवादी दर्शन है परमात्मा क्रिया और ध्यान से परे। जबकि दुनिया के अस्तित्व की व्याख्या इच्छा, क्रिया के बिना नहीं की जा सकती। इच्छा से ही एकोहम बहुस्याम का प्रारूप बना है। वीर शैवों का सम्बन्ध देवालयों या साधना के प्रकारों का उतना महत्त्व नहीं, जितना इष्ट लिंग का जिसकी प्रतिमा शरीर पर धारण की जाती है। आध्यात्मिक गुरु प्रत्येक वीर शैव को इष्ट लिंग अर्पित कर उसके कान में पवित्र मन्त्र षडाक्षर (ओम नमः शिवाय) फूँक देता है। प्रत्येक वीरशैव स्नानादि कर हाथ की गदेली पर इष्ट लिंग की प्रतिमा रखकर चिन्तन और ध्यान द्वारा मन्त्र आराधना करता है। प्रत्येक वीरशैव में सत्यपरायणता, अहिंसा बन्धुत्वभाव, नैतिकता, मादक सेवन न करने की सामिष भोजन आदि से परहेज अच्छे गुणों की आशा की जाती है। चोरी न करना, झूठ न बोलना, अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निन्दा न करना, अपनी पत्नी के सिवा अन्य सब स्त्रियों को माता के समान समझना आदि कन्नड़ भाषा में समाविष्ट निर्देश हैं। वेद पुराण, उपनिषद सभी संस्कृत भाषा में हैं। उनका सार ही कन्नड़ भाषा में गुरुओं–योगियों की वाणी में दर्शाया गया है। इसे ही मत कहते हैं। यह सनातन हिन्दू परम्परा का एक अंग है। संविधान के अनु. २९ में अल्पसंख्यक वर्गों के हितों का संरक्षण संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार के अन्तर्गत दिया गया है, जिसमें नागरिकों के किसी अनुभाग को जिसकी अपनी विशेष भाषा लिपि या संस्कृति है, उसे बनाये रखने का अधिकार होगा। अनु. ३० में शिक्षा संस्थाओं की स्थापना जबकि अनु. २५ में धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार में अन्तःकरण की ओर धर्म के अबाध रूप से मानने आचरण व प्रचार करने की स्वतंत्रता दी है। अतः सरकारों द्वारा उपासना के आधार पर अल्पसंख्यक घोषित करना उसके आधार पर समाज को राजनैतिक लाभ के लिए बाँटना संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है।

इसी प्रकार उत्तर भारत में भी वैष्णव समाज है, जिसमें तथाकथित सवर्ण, बैकवर्ड, दलित सभी में सात्विक जीवन, सत्य आचरण निरामिष भोजन, मद्पान से दूर तुलसी की माला व तिलक धारण करते हैं। सन्त रामानन्द जी सन्त रविदास जी आदि की परम्परा चली आ रही है। रैदासों का बहुत बड़ा समाज है, जिन्हें दलित कहते हैं जबकि वे वैष्णव हैं। कर्नाटक में दूसरी वोक्कालिंगा समाज है जिसको पिछड़ी जाति कहा जाता है देवगौड़ा जी इनके नेता कहे जाते हैं दूसरी बड़ी संख्या है सिद्धारमैया जी भी कुरवा अर्थात् गड़रिया (पाल) समाज के हैं जिनकी संख्या ९ प्रतिशत के करीब है। कांग्रेस के परम्परागत अल्पसंख्यक मुस्लिम, सवर्ण तथा दलित वोट हुआ करते थे। दलित वोट कांग्रेस से अलग हो रहा, अतः समाज शेष पृष्ठ 10 पर

श्री केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग

भारतमाता के मुकूट समान गिरिराज हिमालय के शिखरों पर श्री केदारनाथ ज्योतिर्लिंग बिराजमान है। उत्तराखंड की चार धाम की यात्रा में गंगोत्री, यमनोत्री, केदारनाथ एवँ बदरीनारायण की यात्रा का समावेश है। यह ज्योतिर्लिंग मंदाकिनी के तट पर बिराजमान है। महाभारत की परंपराओं में इसका उल्लेख है। पाँडव बंधुओं ने इसी पावन पथ से महाप्रस्थान किया था। भगवान नरनारायण ने भी यहाँ पे भगवान शिव की उपासना की थी। सतयुग में महान शिवभक्त उपमन्यु ने इसी पावन भूमि में तप किया था। नागाधिराज हिमालय की पुत्री माता पार्वती ने भगवान शिव का वरण करने के लिए उग्र तपस्या की। परंतु भोलेबाबा तो अपनी समाधि में मस्त थे। विश्व के कल्याण के लिए शिव और शक्ति का मिलन आवश्यक था। देवताओं के आग्रह से वश होकर कामदेव ने शिव पार्वती को मिलाने के लिए प्रयास किया। भगवान शिवजी समाधि में से जागृत हुए। कामदेव की इस चेष्टा से क्रोधित हुए भगवान महारुद्र ने अपना तीसरा नेत्र खोल के कामदेव को भस्म किया। कामदेव की पत्नी रति की प्रार्थना से भगवन शांत हुए और क्षमा प्रदान की। दूसरी ओर भगवती पार्वती की मनोकामना भी पूर्ण हुई। भगवान शिव ने पार्वती का वरण किया। इस पावन कथानक का तात्पर्य यह है कि शिव और शक्ति के संगम से पहले कामदेव का भस्म होना आवश्यक था। इसमें एक अद्भुत सामाजिक बोध छिपा हुआ है। नर और नारी का विवाह मात्र शारीरिक क्रिया नहीं है। यह तो एक बड़ा ही पावन प्राकृतिक वरदान है। दाम्पत्य जीवन के माध्यम से एक स्वस्थ, सुसंस्कृत एवँ समृद्ध समाज के निर्माण का कर्तव्य निभाने की आर्ष दृष्टि को समझें और अपने वैवाहिक जीवन को पूर्णकाम बनाएँ।

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान

✍ म.म. स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज सरस्वती

शक्ति और शक्तिमान के माध्यम से ही सारे संसार का सृजन होता है। भारतीय संस्कृति में जो ज्ञान के भंडार वेद हैं उनमें शक्ति की महिमा का विशेष रूप से वर्णन है। मातृ देवो भव पितृ देवो भव आचार्य देवो भव। तैत्तीरिय उ.–२ एकादशी अनुवादक उपरोक्त तीन देवताओं में मातृशक्ति को प्रधान देवता कहा है। वेदों के स्वस्तिवाचन में भी मातृशक्ति की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है–

प्रदिति द्यौरदितिरन्त रिक्ष मदितिर्म्माता सपितास पुत्रः। मातृ पितृ चरण कमलेम्यो नमः।

माता–पिता के चरणों में इस मंत्र में भी प्रथम माता के चरणों के उपरान्त पिता के चरणों को प्रणाम करने की प्रेरणा निहित है। शस्त्र शिरोमणि भगवत् गीता जो सगुण साकार भगवान की वाणी है उसके दशम अध्याय विभूति योग में भगवान श्रीकृष्ण नारी शक्ति को अपनी विभूति का वर्णन करते हुए कहते हैं।

कीर्तिः श्री वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृति क्षमा (गीता–१० श्लोक–३४)

स्त्रियों में कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा है। इस प्रकार श्रुति स्मृति जो दोनों परब्रह्म परमात्मा की वाणी है उनमें नारी शक्ति का विशेष महत्त्व बताया है।

धर्म शास्त्र मनुस्मृति में मनु जी ने भी नारी शक्ति को परम श्रेष्ठ कहा है–

उपाध्याषटगुणानमाचार्य उप्राचार्यान्षत गुन्पिता सहस्त्र गुणान्तु पितु माता गौखेणा तिरिच्यते।-मनुस्मृति

अर्थात् उपाध्यायों से दस गुना आचार्य से सौ गुना पिता और पिता से माता हजारों गुना श्रेष्ठ होती है। श्री रामचरितमानस में जब श्री राम ने माता कौशल्या से वन गमन हेतु आदेश के लिए कहा तो माता ने तुम वन को प्रस्थान करो, श्री राम ने कहा माँ पिता का आदेश है। माता ने कहा हे राम यदि पिता ने वन गमन का आदेश दिया है तो मैं अपने विशेषाधिकार से उस वन गमन के आदेश को निरस्त करती हूँ क्योंकि आपके पिता श्रेष्ठ हैं किन्तु पिता से माता का सन्तान पर विशेषाधिकार होता है।

जो केवल पितु आयुस ताता, तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।

श्रीरामचरित मानस

महाभारत जिसे ऋषियों ने पंचम वेद कहा है उसमें भी नारी शक्ति के महत्त्व का वर्णन है। पितृ वृत्या इमम् लोके मातृ वृत्या तथा परम महाभारत। अर्थात् पिता की ब्रह्मभाव से सेवा करने वाले का यश इस लोक में होता है परन्तु माता की सेवा भक्ति वाले साधक की प्रतिष्ठा तो परलोक में भी होती है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति में माता को मनुष्यों में तो क्या देवताओं में भी सर्वश्रेष्ठ देवता कहा है।

नान्नोदकं समं दानं ना तिथिर्द्वादशी समा गायत्रा परोमन्त्रो न मातृदेव मतः परम शास्त्रवचन, अर्थात् अन्न जल के समान कोई दान नहीं। द्वादशी से बढ़कर कोई तिथि नहीं, गायत्री से बढ़कर कोई मंत्र नहीं और माता से बढ़कर कोई देवता नहीं, सज्जनों, माता एक ऐसा देवता है जिससे सभी ऋषि–मुनि तथा जीव जन्मते हैं और तो क्या श्री भगवान जी भी जब अवतार धारण करते हैं तब वे किसी ममतामयी माता के समक्ष ही प्रकट होते हैं। रामायण में श्रीराम भी माता कौशल्या के सन्मुख प्रकट हुए। श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण भगवान भी माता देवकी के सामने चार बाहों से अवतरित हुए यह लोक प्रसिद्ध ही है।

मातृशक्ति की महानता के कारण सभी संत महात्मा भगवत स्मरण अथवा कीर्तन करते हैं तब माता के नाम से ही शब्द प्रथम उच्चारण करते हैं। यथा सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर इत्यादि। प्राचीन काल से ही मातृशक्ति का विशेष गौरव रहा है। गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री ने पुरुषों से भी शास्त्रार्थ किया था। शंकर के अंशावतार श्रीशंकराचार्य को भी मण्डन मिश्र की धर्मपत्नी ने एक बार एक विषय का अनुभव करने हेतु परकाया में प्रवेश करने तक को बाध्य कर दिया था।

आधुनिक युग में मीरा, मदालसा तथा वीरांगना लक्ष्मीबाई आदि प्रमुख हैं। अतः जगत में नारी जाति एक महान रत्न है। सुधी जन कहते भी हैं जगँत में नारी रत्न की खानि, इसी खान से प्रकट हुए हैं–ध्रुव प्रह्लाद। समान नवरात्रों में सभी साधक कुमारी कन्याओं को माता दुर्गा का स्वरूप मानकर पूजा करते हैं। अतः सनातन वैदिक धर्म में नारी शक्ति को प्रथम पूज्य मानकर सर्वश्रेष्ठ रूप से स्वीकार किया गया है। वेद गीता के मतानुसार शक्ति और शक्तिमान सूत्र परमात्मा ही है।

पर नारी शक्ति के रूप में परमात्मा श्रद्धा सद्भावना तथा करुणा शेष पृष्ठ 10 पर

स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करें?

स्त्री आदर और प्यार की वस्तु है। अनेक कार्य जो शक्ति न होने से नहीं कर सकते, वे स्त्री की सहायता से सशक्त होकर कर सकते हैं। इसलिए स्त्री का नाम शक्ति है। वह धर्म–कर्म में सहायता देती है, इसलिए उसका नाम है सहधर्मिणी और हमारे सत्व को गर्भ में धारण करती है, इसलिए उसका नाम है जाया। इसी से कहना पड़ता है कि धर्म, कर्म, काम, मोक्ष सभी अवस्था में स्त्री हमारी प्रधान सहायिका है। हम यदि नरक को जायेंगे तो वही ले जायेगी। स्वर्ग का पथ वही दिखायेगी। वैराग्य और मोक्ष–पद पहुँचाना भी उसी के हाथ है।

स्त्रियाँ ही जगजीवन और प्रेमभक्ति की आधार हैं। फिर असद्व्यवहार करने पर वे ही घोर कालरूपिणी पिशाचिनी और राक्षसिनी होकर सबको ग्रास करती हैं। स्त्री रूपी महासमुद्र में बड़े–बड़े अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं। बड़ी सावधानी से इन महाशक्तियों के साथ व्यवहार करो। कभी भूलकर भी कुदृष्टि से स्त्रियों को मत देखो। ब्रह्मा, विष्णु, महेश का सम्मेलन तुम एक स्त्री में देख सकते हो। स्त्रियों का अपमान ध्वंस का कारण है।

पागल हरनाथ

स्वतन्त्रता दिवस की ७१ वीं वर्ष गाँठ दिनांक १५-८-२०१८

देश को स्वतन्त्र कराने के लिए कई पार्टियां प्रयास कर रही थीं। इनमें सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस बनी जिसे बड़ा करने में आर्यों का अभूतपूर्व योगदान रहा जबकि उन्हें राजार्य सभा या हिन्दू महासभा को मजबूत करना चाहिए था। कांग्रेस ने आर्यों को कुछ भी नहीं दिया फिर भी मूर्ख– मुर्दा आर्य अभी भी कांग्रेस में हैं। १९४५–४६ के चुनावों में गांधी ने कहा कि वह और नेहरू दोनों हिन्दू हैं और वे हिन्दू हितों का पूरा ध्यान रखेंगे इसलिए हिन्दू महासभा को चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। वीर सावरकर ने कहा कि हिन्दू महासभा को गांधी पर विश्वास नहीं है इसलिए वह चुनाव लड़ेगी। गुरु गोलवलकर ने उन स्वयंसेवकों के नाम वापिस करा दिए जिन्होंने हिन्दू महासभा की टिकट पर नामांकन पत्र दाखिल किए थे। चुनावों में आर्यों और स्वयं सेवकों को वोटें न मिलने पर हिन्दू महासभा के सारे प्रत्याशी बेशक हार गए फिर भी पार्टी को १६ प्रतिशत वोटें मिलीं।

१३ प्रतिशत मुस्लिमों ने मुस्लिम लीग को वोटें देकर देश विभाजन का समर्थन करके अपनी गद्दारी प्रदर्शित की जबकि कांग्रेसी ०७ प्रतिशत मुस्लिम वोटें पाकर खुश हो गए। जिन्ना ने लीगियों से आक्रामकता, दंगे, फसाद, झगड़े करने के लिए कहा ताकि कांग्रेस डरकर देश विभाजन को सहमत हो जाए।

१६ अगस्त १९४६ की मुस्लिम लीग की सीधी कार्रवाई से कांग्रेसी नेता घबरा गए। नेहरू और पटेल देश विभाजन पर सहमत होकर गांधी जी उनकी स्वीकृति लेने के लिए गए। हिन्दू विरोधी गांधी को यह उत्तर देना चाहिए था कि मैंने हिन्दू हितों का वायदा करके चुनाव जीता है इसलिए मेरी राय है कि खंडित भारत की सरकार हिन्दू महासभा चलाए। सारे हिन्दू कांग्रेसी हिन्दू महासभा में चले जाएं और ०७ प्रतिशत मुस्लिम कांग्रेसी पाकिस्तान चले जाएंगे अतः कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाए। किन्तु झूठे और मुस्लिम प्रेमी गांधी ने ऐसा उत्तर न देकर मुर्दा–मूर्ख हिन्दुओं को खुल्लम–खुल्ला धोखा दिया और बेवकूफ बनया।

यदि खंडित भारत का शासन हिन्दू महासभा के हाथ आता तो भाई परमानन्द गवर्नर बनते और वीर सावरकर प्रधानमंत्री। कांग्रेस को छोड़कर आने वाले अधिकांश नेताओं को विभिन्न मंत्रालय तो दिए जाते किन्तु उन्हें भी अपनी सोच–मानसिकता बदल कर कार्य करना होता तब राम राज्य आ जाता– अच्छा संविधान बनता– राष्ट्रीय ध्वज भगवा होता–हिन्दू धर्म सरकारी धर्म बनता–गोहत्या और शराब बन्दी लागू होती। एक हजार साल गुलाम रहे हिन्दू के आंसू पूछ जाते और उसके चेहरों पर मुस्कान होती। मन्दिरों का जीर्णोद्धार होता। देश में एक भी मुस्लिम नहीं दिखाई देता अतः हिन्दू जाग जा क्योंकि तेरा अस्तित्व खतरे में है।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

१० अगस्त पुण्य तिथि पर श्यामलाल गुप्त पार्षद

श्यामलाल गुप्त पार्षद का जन्म **१६ सितम्बर, १६८३ को कानपुर के पास ग्राम नरवल (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।** वह बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत थे। परविार के व्यवसाय अथवा नौकरी का आकर्षण उनके देश सेवा की ओर बढ़ते हुए कदमों को नहीं रोक सके। **उन्होंने देशवासियों को गुलामी से मुक्त कराने हेतु अपने मासिक पत्र 'सचिव' को माध्यम बनाया।** इस पत्र के प्रत्येक अंक के प्रथम पृष्ठ पर ही निम्न प्रेरक पंक्तियां छपती थीं।

रामराज्य की शक्ति शान्ति सुखमय स्वतंत्रता लाने को।
लिया 'सचिव' ने जन्म, देश की परतंत्रता मिटाने को।।

इस पत्र के वह **केवल १८ अंक ही निकाल पाए। उसके बाद आर्थिक समस्या से जूझते हुए यह बन्द कर दिया गया।** अब वह खुलकर स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने लगे। **सन् १६२४ तक जितने भी देशभक्ति के गीत थे उनमें झण्डागीत के रूप में अपनाने लायक कोई भी नहीं था। अतः पार्षद जी को झण्डा गीत लिखने का दायित्व सौंपा गया।** उन्होंने झण्डा गीत लिखा जिसकी प्रथम दो पंक्तियां इस प्रकार थी।

झण्डा ऊंचा रहे हमारा।.....
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।

यह गीत सभी को पसंद आया। यह गीत सारे भारत वर्ष में गया जाने लगा। **यह झण्डा गीत 'वन्देमातरम्' की तरह स्वतंत्रता सेनानियों का प्रबल अस्त्र बन गया।** इन्हें इस गीत का मूल्य जेल यात्राओं से चुकाना पड़ा। **वह ६ बार जेल गए।** जेल से छूटने के बाद उन्होंने 'दोस वैश्य पत्रिका' का प्रकाशन आरम्भ किया। **देश का आजादी के बाद देश ने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जिसके वह हकदार थे।** १० अगस्त, १६७७ को वह स्वर्ग सिधार गए।

१३ अगस्त बलिदान दिवस पर जनरल थंगल एवं युवराज टिकेन्द्रजीत सिंह

युवराज टिकेन्द्रजीत सिंह का जन्म **२५ दिसम्बर, १८५८ को हुआ था।** उन्होंने अनेक युद्धों में भाग लिया था एवं अपने शौर्य से अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। उनकी यशधारा एवं कीर्ति का अंग्रेज भी लोहा मानते थे। इसी कारण **मणिपुर के शासक कुलचन्द्र ने टिकेन्द्रजीत सिंह को मणिपुर का युवराज एवं सेनानायक घोषित किया।** जनरल थंगल एक वृद्ध एवं मणिपुर के पूर्व सम्मानित सेनानायक थे। अब भी वह मणिपुर शासन में टिकेन्द्रजीत सिंह के सहयोगी एवं प्रेरक की भूमिका निभा रहे थे।

जनरल थंगल की प्रेरणा से टिकेन्द्रजीत सिंह ने आदिवासी क्षेत्रों में अंग्रेजों के मनमाने अत्याचारों का विरोध किया। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति का उद्घोष कर दिया। **अंग्रेजों ने टिकेन्द्रजीत सिंह को चालाकी से संधि के बहाने गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया। लेकिन सफलता हाथ न लगी। उलटा अंग्रेजों को अपने पांच उच्च अधिकारियों की जान गंवानी पड़ी।** इस घटना से अंग्रेज अधिकारी तिलमिला उठे। उन्होंने युवराज एवं जनरल थंगल को पकड़वाने हेतु भारी इनाम की धोषणा करा दी। **इनाम के लालच में कुछ गद्दारों ने इन क्रान्तिवीरों की युद्ध नीति एवं गुप्त ठिकानों की महत्वपूर्ण सूचनाएं अंग्रेजों के पास पहुंचा दी। इन्हीं का लाभ उठाकर अंग्रेज साम्राज्य की विशाल सेना ने इनके ठिकानों पर आक्रमण कर दिया।** दोनों ओर से भारी युद्ध हुआ।.... इसे इतिहास में 'एंग्लों मणिपुर वार १८८१' नाम से जाना जाता है।

अंत में वीर टिकेन्द्रजीत सिंह एवं जनरल थंगल को गिरफ्तार कर १३ अगस्त, १८६१ को फांसी पर लटका दिया गया। **टिकेन्द्रजीत सिंह की विधवा रानी १६३० के बाद तक वृंदावन में अपनी नेत्रों की ज्योति खोकर आर्थिक विपन्नता एवं असहाय अवस्था में जीवन काटती रही।** वहीं उन्होंने अंतिम श्वास ली।

१६ अगस्त जयंती पर धन्य धन्य वह बाल वीर दत्तू रंगारी

दत्तू रंगारी का जन्म १६ अगस्त, १६२६ को बेलहुँगल, बेलगांव (कर्नाटक) में हुआ था। दत्त् रंगारी बचपन से ही देश–भकित की भावना से ओतप्रोत था। वह तेज बुद्धि का बालक था। **पिता के मुख से 'वन्देमातरम्' सुन कर वह भी तोतली भाषा में उसे दोहराता था** तो उसकी बाल क्रीड़ाएं देख कर सभी उसे 'नन्हा क्रांतिकारी' कहने लगे। स्कूल में भी उसे अच्दे अध्यापक मिले। अंग्रेजों के अत्याचारों की कहानी सुन–सुन कर वह बचपन से ही क्रान्ति की राह पर चल पड़ा।

२३ अगस्त, १६४२ को बेलगांव में अंग्रेजों! भारत छोड़ों आन्दोलन का जुलूस निकलना था। उससे पूर्व ही उसने अपनी कक्षा सहपाठियों के साथ मिल कर उसमें शामिल होने की योजना बना ली। जुलूस आरम्भ हुआ। तिरंगा हाथ में लिए वह भी अपनी टोली के साथ जुलूस के आगे–आगे चलने लगा। **भावी त्रासदी से अनुभिज्ञ बालकों की टोली आगे-आगे नारे लगाती बड़ा गर्व महसूस कर रही थी। सामने बंदूकें ताने पुलिस ने जुलूस का मार्ग रोक लिया।** चेतावनी के बाद भी बालकों की टोली आगे बढ़ने लगी तो पुलिस ने गोली चला दी। दत्तू को सीने में गोली लगी। वह बेहोश होकर गिरने लगा।....**गिरने से पहले ही उसने झंडे को किसी दूसरे साथी को थमा दिया। जुलूस में भगदड़ मच गई।** दत्तू रंगारी को उठा कर होश में लाने की कोशिश की गई। लेकिन उसकी बेहोशी नहीं टूटी। **मात्र १३ वर्ष की अल्प आयु में ही उसने मातृ-भूमि पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।**

१७ अगस्त शहीदी दिवस पर अमर हुतात्मा मदनलाल ढींगरा

मदनलाल ढींगरा का जन्म पंजाब के एक गांव में १८२७ में हुआ था। **मदनलाल ढींगरा ने श्याम जी कृष्ण वर्मा, विनायक सावरकर व मैडम कामा के साथ विदेशों में क्रान्ति की मशाल को प्रज्ज्वलित किया। लन्दन में कर्जन वायली भारतीय क्रान्तिकारी वीरों के खिलाफ जासूसी करता था। इसी कारण अनेक क्रान्तिकारी वीरों को सजा मिल चुकी थी या वे फांसी पर लटकाए जा चुके थे।**

अत...**एक जुलाई, १६०६ को लन्दन के इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के हाल में मदनलाल ढींगरा ने कर्जन वायलली को गोली मार दी।** इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। **मुकदमे के अंतिम दिन वह अपने बयान को पहले ही कागज पर लिख कर ले गए थे। उनका बयान इस प्रकार था ''मैंने जो कुछ किया है ठीक ही किया है, अंग्रेज लोगों को भारत को अपने कब्जे में रखने का कोई अधिकार नहीं हैं।..... यदि जर्मन लोग इंग्लैण्ड पर अपना अधिकार कर लें तो अंग्रेज लोग वहीं करेंगे जो मैंने किया।** आप लोग मुझे मृत्यु दण्ड दे सकते हैं। मेरी मृत्यु अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की आग को भड़काने का काम करेगी।.....''

अंग्रेजों ने यह बयान अपनी बदनामी के डर से प्रकाशित ही न होने दिया। लेकिन वीर सावरकर ने बड़ी चतुराई से अपने मित्र ज्ञान चन्द वर्मा के द्वारा उस बयान की प्रति फांस, इंग्लैण्ड व विश्व के समाचार पत्रों में प्रकाशित हो गया। मदनलाल ढींगरा को १७ अगस्त, १६०६ को पैन्टोनविले (लदंन) जेल में फांसी दे दी गई। फांसी वाले दिन ही प्रातः इंग्लैण्ड की सड़कों और चौराहों पर एक पर्चा वितरित किया गया–**''आज १७ अगस्त, १६०६ का दिन प्रत्येक देशभक्त भारतीय के पक्ष पर खून से लिखा जाना चाहिए। आज के दिन सर्वोत्कृष्ट देशभक्त मदनलाल ढींगरा को फांसी पर लटकाया जाएगा। उसका पवित्र नाम हमारे देश के इतिहास के पृष्ठों को अलंकृत करेगा। उसकी आत्मा हमारी आजादी की लड़ाई में हमारा पथ प्रदर्शन करेगी।''**

१६ अगस्त पुण्य तिथि पर क्रान्ति लक्ष्मी मैडम भीखाजी रुस्तम कामा

मैडम भीखाजी कामा का **जन्म मुम्बई के धनी पारसी परिवार में २४ सितम्बर, १८६१ को हुआ था।** मैडम भीखाजी कामा इलाज के लिए १६०१ में लन्दन गई थी। वहां वह क्रांन्तिवीरों के सम्पर्क में आईं। उनहोंने देश को दासता के बंधनों से मुक्त कराने हेतु अपने पारिवारिक बंधनों को त्याग दिया। **लन्दन में श्याम जी कृष्ण वर्मा के साथ मिल कर क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करने लगीं।** अपने ओजस्वी भाषणों से अंग्रेजों द्वारा भारत में किए जा रहे अत्याचारों की पोल खोली। लन्दन में गिरफ्तारी के भय से पेरिस जाकर वीर सावरकर व लाला हरदयाल आदि क्रान्तिवीरों के साथ भारत की आजादी के संघर्ष में जुटी रहीं। **जर्मनी में समाजवादियों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया एवं भारत की ओर से यूनियन जैक के स्थान पर भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में 'वंदे मातरम्' लिखा तिरंगा ध्वज फहरा कर सभी को अचंभित कर दिया।** इस ध्वज पर सात सितारे, कमल, सूर्य व अर्धचन्द्र के चिन्ह अंकित थे जोकि खुशहाल भारत के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते थे। **१६०७ में विदेशों में फहराया जाने वाला यह प्रथम राष्ट्रीय ध्वज था। यह ध्वज आज भी पुणे में 'मराठा' व 'केसरी' समाचार पत्र के पुस्तकालय में सुरक्षित है।** प्रथम विश्व–युद्ध छिड़ने पर मैडम कामा ने फ्रांस में घोषणा कर दी–**'भारत इस युद्ध में अंग्रेजों का साथ नहीं देगा'। अतः अंग्रेजों के दबाव में आकर फांस की सरकार ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया। और युद्ध की समाप्ति पर ही १६१८ में छोड़ा।** चार वर्ष के कठोर कारावास से उनका शरीर जर्जर हो गया। अतः अपना अंतिम समय निकट देखकर अपनी मातृभूमि भारत की रज का स्पर्श पाने को वह आतुर हो उठीं। ब्रिटिश सरकार ने बड़ी कठिनाई से उन्हें भारत प्रवेश की अनुमति दी। **भारत आने के कुछ माह १६ अगस्त, १६३६ को वह पंचतत्व में विलीन हो गई।**

श्री अरविन्द

१५ अगस्त भारत के विख्यात योगी एवं वेदों के रहस्य उद्घाटक महर्षि अरविन्द का जन्मदिवस है। प्रचण्ड क्रांतिकारी, लोकमान्य तिलक के साथ गरमदल की क्रांति योजनाओं में भाग लेने वाले तथा पनी ओजस्वी, निडर और मर्मस्पर्शी भाषा में देश भक्ति व संस्कृति सम्मान के साथ–साथ **अंग्रेजों की प्रचुर आलोचना करने वाले** श्री अरविन्द एक विचित्र व असामान्य व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। **विश्व की**

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति

नमस्कार।

आपसे ११–१२ (संयुक्तांक) वीर सावरकर विशेषांक १३५ वीं जयंती प्राप्त हुई। धन्यवाद। स्व. वीर सावरकर विशेषांक प्रकाशित कर लोगों में एक तरह का वीरोत्कर्ष की भावनां उत्पन्न की है। मैंने पूरी पत्रिका पढ़ी मन में एक तरह का अंतिम उत्कर्ष उत्पन्न हुआ। भारत में जन्में एक व्यक्ति ने भारत के लिए अपना जीवन ही अर्पण किया है। ऐसे लोग आजकल मिलना दुर्लभ कठिन सा है। लोग अपने स्वार्थ के लिए जीते हैं। यही आत्मोन्नति ही। दूसरों के लिए क्या करें? महान शक्ति देश इतिहास व्यवहार और हिन्दुस्तान के वैभव को बढ़ाता है। हम आज कितनी स्त्रियाँ और पुरुष देश के लिए मर मिटे हैं। उनकी यादगार हर एक व्यक्ति को करनी चाहिए। पाठय पुस्तकों में भी उनका नाम पढ़ाकर उत्तेजित करना है। तब लोग अपने राज्य में देश पर मर मिटेंगे। तब देश, राज्य उनको याद करेंगे। नही तो कैसे होगा? माता, पिता अपने बच्चों को ये बात ठीक तरह समझाना है।

आजकल लोग राजकीय में फंसे हुए है। ऐसा होने से राज्य का, देश का सत्यानाश होगा। भगवान ही सभी लोगों के अच्छी बात को ही समझाना होगा। कष्ट सहिष्णु, साहित्यकार कैदी इस संसार में वीर सावरकर के अलावा न कोई हुआ है, न होगा। सच में सावरकर अद्वितीय थे।

भवदीया

बी. एस. शांताबाई (प्रधान सचिव)

अखण्डित भारत दिवस १४ अगस्त १९४७ ई०

हमारा देश अति प्राचीन राष्ट्र है। विश्व में आबादी के हिसाब से यह सबसे बड़ा देश था जबकि इसके पास विश्व की केवल २.२% ही भूमि है किन्तु इसकी आबादी १६.७% है। भूमि के हिसाब से जनसंख्या ५७–१८ करोड़ ही होनी चाहिए तभी मौसम ठीक रहेगा। प्रदूषण नहीं होगा और देश का चहुंमुखी विकास हो सकता है। ऐसे में जनसंख्या १०–१२ गुना ज्यादा है जिसके कारण पानी, बिजली, यातायात में जाम, बीमारी, कुपोषण, शिक्षा–संस्थाओं का अभाव, झुग्गी/झोपड़ियों का फैलता जाल, अपराध, बलात्कार आदि कारणों से देश की स्थिति सामान्य नहीं कही जा सकती है। भारत में केरल में ६०० वर्ष पूर्व पहली मस्जिद बनी और केरल में ही २५० वर्ष पूर्व पहला चर्च बना। दोनों हिन्दू राजाओं की अति उदारता का कुफल देश ने १९४७ में देखा और भविष्य में भी गम्भीर दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे क्योंकि हिन्दू से सत्ता छीनने के लिए मुस्लिम, ईसाई निश्चित रूप से एक मंच पर आ जाएंगे। हिन्दू को वीर सावरकर और भाई परमानन्द का अनुयायी बनना होगा अन्यथा उसका विनाश दिखाई दे रहा है क्योंकि देश के १९४७ में हुए बंटवारे से नेहरू, गांधी जैसे विश्व स्तर के अदूरदर्शी नेताओं ने कुछ नहीं सीखा और भोली जनता अब भी उन्हें महान मानती है।

देश के कई हिन्दू संगठन १४ अगस्त को अखण्ड भारत दिवस मनाते हैं। १४ अगस्त को पश्चिम तथा पूर्व में दो कट्टर इस्लामी राष्ट्र भारत की ३१२४ लाख वर्ग मील भूमि पर अस्तित्व में आ गए थे और उन क्षेत्रों में रहने वाले करोड़ों हिन्दू एक झटके में ही द्वितीय क्षेणी के नागरिक घोषित कर दिए गए थे । उनका क्या दोष था? उन्होंने नेहरू–गांधी पर जरूरत से ज्यादा विश्वास किया! गांधी जी ने कहा था कि वे तथा नेहरू भी तो हिन्दू हैं अतः वे उनका ख्याल करेंगे। उनका आश्वासन कतई पूरा नहीं हुआ। दुर्भाग्य हिन्दू का है। स्मरण रहे कि नेहरू तो मुगलवंशी फैजुल्ला खान का पोता है जिसने कत्ले आम से बचने के लिए अपना नाम गंगाधर रख लिया था। अतः १३ अगस्त को ही अखण्डित भारत दिवस मनाया जाना चाहिए।

शेष पृष्ठ 7 का **लिंगायत पन्थ को हिन्दू समाज.....**

को बाँटकर सरकार बनाने के लिए जाति, वर्ण संघर्ष हेतु समाज को बाँटना आज की राजनीति की आवश्यकता हो गई। जबकि संविधान में एकता, अखण्डता, बंधुता तथा लोकतंत्र इसके लिए स्वतंत्रता होना प्रत्येक नागरिक के संवैधानिक अधिकार जिसमें जीने का अधिकार इसके लिए शिक्षा, चिकित्सा, भोजन हेतु कार्य का अधिकार, नियम कानून की समानता, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक न्याय इसका विकास हो इसके लिए देश की आर्थिक नीति अनु. ३८ व ३९ में दी गई है, जिसका राजनैतिक पार्टियों व राजकर्ताओं व न्यायालयों को अनुसरण करने की आवश्यकता है, जिसकी सभी उपेक्षा करते हैं। देश की जनता व समाज को जागरूक होकर इस विद्वेषपूर्ण बँटवारे से बचना चाहिए। एकता में ही शक्ति सामर्थ्य व लोक कल्याण होता है, जिस पर देशहित में समाज अग्रसर हो।

शेष पृष्ठ 8 का **भारतीय संस्कृति में नारी....**

के रूप में अनुभूत होता है। वासुदेव सर्वम् गीता। गीता गंगा गायत्री को हिन्दू धर्म की आधारशिला माना गया है।

गीता गंगा च गायत्री, गौ गुरु तुलसी दलम,
पूजा च पंच देवानां हिन्दू धर्मस्य रक्षणम्।

गीता गंगा गायत्री गौ गुरु तुलसी दल तथा पंच देवों की उपासना यह हिन्दू धर्म का लक्षण है। यह सत्य ही शास्त्र का वचन है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का निवास होता है।

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है

क्योंकि हिन्दू और केवल हिन्दू ही इस देश को भारत माता मानते हैं जबकि अन्य धर्मावलम्ब तो इसे माता कहने मात्र से भी चिढ़ते हैं। अतएव इस देश की एकता व अखण्डता की रक्षा केवल हिन्दुत्व की भावना ही कर सकती है।

ध्यान रखिये :

- किसी भी इस्लामी राष्ट्र में हिन्दुओं को वैसी धार्मिक स्वतन्त्रता उपलब्ध नहीं हैं जो यहाँ सभी धर्मावलम्बियों को है।
- इस धरती पर भारत ही एकमात्र राष्ट्र है जहाँ हिन्दू बहुसंख्यक है।
- यदि यहाँ भी हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये तो सम्पूर्ण विश्व से हिन्दू धर्म ही पूर्णतः समाप्त हो जाएगा।
- धर्मान्तरण से ही राष्ट्रान्तरण होता है।
- तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियों ने (किन्तु वस्तुतः मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरणवादियों पूर्व में भी भारत माता का अंग–भग करवाया था तथा भविष्य में भी वे अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु भारत के और अंग–भंग करवाने में नहीं हिचकिचायेंगे।
- सम्पूर्ण देश में हिन्दू महासभा ही एक मात्र ऐसा राजनैतिक दल है जो हिन्दू हितों की हित के प्रति मनसा–वाचा–कर्मणा जागरूक तत्पर और सन्नद्ध है।
- शेष सभी दल वचन से धर्मनिपेक्षतावादी तथा मन व कर्म से मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरणवादी है।

अत : यदि आप चाहते हैं कि :–

सन् **1947** की भाँति भारत माता का भविष्य में और अधिक अंग–भंग न हो और धरती पर हिन्दू सदैव अक्षुण्ण रहे, तो –

- अविलम्ब अखिल भारत हिन्दू महासभा के सदस्य बनिये।
- हिन्दू महासभा को तन–मन व धन से सहयोग दीजिये।
- लोकसभा, विधानसभा आदि सभी चुनावों में सदैव हिन्दू महासभा के प्रत्याशियों को ही अपना मत व समर्थन दीजिये।
- हिन्दू महासभा के मुख्यपत्र साप्ताहिक 'हिन्दूसभा वार्ता' के ग्राहक बनें और बनाइये। वार्षिक शुल्क रू. **150/-**

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- **केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का **सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच...**

ऑपरेशन शुरू किया गया था। सर्च ऑपरेशन के दौरान सुरक्षाबलों को जंगल में छिपे कुछ आतंकियों के छिपे होने की भनक लग गई। जिसके बाद इन आतंकियों की घेराबंदी कर उन्हें सरेंडर करने के लिए कहा गया। वहीं आतंकियों ने सरेंडर की अपील को खारिज करते हुए सुरक्षाबलों पर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। जिसके जवाब में सुरक्षाबलों की तरफ से आतंकियों को मुहतोड़ जवाब दिया गया। सेना की जवाबी कार्यवाही के सामने कमजोर पड़ते आतंकियों ने मौके से भागने में अपनी भलाई समझी। जिसके बाद वह गोलियों की बरसात करते हुए घने जंगलों के भीतर चले गए। वहीं सुरक्षाबलों ने भी इन आतंकियों का पीछा नहीं छोड़ा। आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच एक बार फिर मुठभेड़ शुरू हो गई, सुरक्षाबलों ने आतंकियों की हर गोली का सटीक जवाब देना शुरू कर दिया। इस मुठभेड़ के दौरान आतंकियों की बंदूक से निकली दो गोलिया सेना के दो जवानों को लग गई। इन दोनों जवानों को मौके से सुरक्षित निकाल कर दुर्गमूला स्थिति सेना के अस्पताल भेजा गया। अस्पताल पहुंचने पर डाक्टर्स ने सेना के एक जवान को शहीद घोषित कर दिया, जबकि दूसरे जवान को गंभीर रूप से जख्मी हालत में भर्ती कर लिया गया। मुठभेड़ में शहादत पाने वाले जवान की पहचान सिपाही मुकुल मीणा के रूप में हुई है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से मांग की है कि जम्मू–कश्मीर से आतंकवाद का पूर्ण सफाया हो।

शेष पृष्ठ 1 का **भारत की तरक्की देख पाकिस्तान.....**

राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई हुई है और वहीं पाकिस्तान में ऐसे लोग हैं जिन्होंने अरबों के घोटाले किए हैं और आज चुनाव लड़ रहे हैं, उपदेश दे रहे हैं। शरीफ ने कहा भारत ने कई मामलों में पाकिस्तान को पछाड़ दिया है। हमें लगता है कि बांग्लादेश हमारे हाथ में है, लेकिन वह भी हमारे हाथ से निकल गया है। सिंगापुर, चीन और चीन को देखें, इन सभी ने हमारे ब्लू प्रिंट पर काम किया और आज हम उनके पीछे हैं। अगर हम अब भी सबक नहीं सीखते हैं तो भगवान ही हमारी मदद करेगा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि पाकिस्तान के चिढ़ने से कुछ नहीं होगा, हिन्दुस्तान पुनः विश्वगुरु बनेगा।

शेष पृष्ठ 5 का **नाम के आगे उपजाति वाचक.....**

है। फिर भी हम चैत नहीं रहे है।

५. ईश्वर ने मानव समुदायक की सुव्यवस्था हेतु वेदों का ज्ञान दिया था, और मानव की सुख शांति का मार्ग बताया था, किन्तु भारत में धर्म निर्पेक्ष कानून के प्रभाव से बुद्धीजीवी व समाज सुधारक, वर्ग भी धर्म के नाम पर अनेक मत मतान्तरों को पल्लपित होते देखकर भी असहाय होकर रह गये हैं। हम अपने ही देश में धर्म सापेक्ष के बजाए धर्म निर्पेक्ष वातावरण पर चिन्तित नहीं हो रहे हैं। चैत नहीं रहे है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 4 का **मेथी के गुण अनेक.....**

है। मेथी के दाने रातभर पानी में भिगोकर सुबह वह पानी पीने से मधुमह के रोग से बचाव होता है। साथ ही वह उच्च रक्तचाप से भी बचाव करता है। जैसे खाने में मेथी का सेवन करने या फिर खाना खाने से पहले एक चम्मच मेथी के दाने को पानी के साथ लेने से एसिडिटी नहीं होती है। बुखार होने पर दिन में तीन बार दो चम्मच मेथी के दानों को नींबू या शहद के साथ लें, साथ ही मेथी से बनी हर्बल चाय पीएँ, शीघ्र राहत मिलेगी, मेथी का साग खाने से रक्त की कमी समाप्त होती है। मेथी के पत्तों को उबालकर खाने से गठिया से आराम मिलता है, एक चम्मच मेथी के दाने एक कप जल में उबालकर आधा कम रहने पर छानकर दिन में दो बार पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। महिलाओ को कमरदर्द में मेथी एक चम्मच चूर्ण को जल या दूध से लें मेथी के पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से चोट की सूजन मिटती है। सर्दी–जुकाम से बचाव के लिए मेथी चूर्ण को घी में भूनकर शक्कर मिलाकर लड्डू सुबह–शाम गर्म जल से लें। मासिक धर्म की रूकावट होने पर मूली के बीज, गाजर के बीज तथा मेथी दाना ४–४ ग्राम पीसकर जल से लें।

शेष पृष्ठ 9 का **श्री अरविन्द.....**

व भारत की लगभग बारह भाषाएं जानने वाले श्री अरविन्द पुरातन भाषाओं लेटिन व ग्रीक में भी सुदत्त थे। इस भाषा ज्ञान ने उन्हें वेदों की शब्दों के प्रच्छन्न अर्थों को समझने में अपूर्व सहायता की। **उनके वेद सम्बन्धी दो ग्रन्थ, ''सीक्रेट आफ द वेद'' हिम द मिस्टिक फायर पूरे विश्व के वेदाध्यायी जनों में रुचि व आश्चर्य से पढ़े जाते हैं।''** विख्यात आर्य विद्वान श्री अमयदेव जी ने स्पष्ट कहा था कि **महर्षि दयानन्द के वेदोद्धार के कार्य को जिस तरह श्री अरविन्द आगे बढ़ा रहे हैं वैसा और कोई नहीं कर सका।....**

महर्षिवर दयानन्द वेद के आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक-सभी अर्थों के ज्ञाता थे किन्तु उनमें प्राप्त अनुवाद सामान्य जनता तक वेदार्थ पहुंचाने के निमित्त प्रस्तुत किए गए अर्थ हैं। वे वेद पर और गहन कार्य करने के इच्छुक थे जो उनकी अकाल मृत्यु से अपूर्ण ही रह गया। पांडिचेरी में लगभग १६१० में श्री अरविन्द प्रमाण कर गए थे। वहीं १६५० में उनोंने देह त्यागी। इस बीच उन्होंने वेदार्थ मन्थन पर बहुत कार्य किया। आर्य पत्रिका निकाली तथा उसके द्वारा भारतीय संस्कृति के अतिशय गौरवपूर्ण पद को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जनता के सामने प्रस्तुत किया। **१६१५ में एक विदेशी-फ्रांसिसी महायोगिनी तपस्विनी मीरा अलफासा उनसे मिल कर बहुत प्रभावित हुईं।** १६२० में वे उनके पास भारत में ही रह गई और वेदाधारित मानवीय चेतना के रूपान्तर कार्य में संलग्न हो गई।

शेष पृष्ठ 6 का **आधुनिक शिक्षा प्रणाली.....**

जा सकता है कि पाश्चात्य शिक्षा नीति न तो भारत में विचारवान मनुष्य बनाना चाहती थी और न ही स्वावलम्बी। उनका उद्देश्य तो गुलाम मात्र बनाना ही रहा है।

यद्यपि यह सत्य है कि केवल भाषा, साहित्य, व्याकरण और दर्शन के आधार पर समाज में सभी को आजीविका प्रदान नहीं की जा सकती; लेकिन यह तर्कसंगत तथ्य है कि इन विषयों के अध्ययन से मनुष्य विचारशील एवं विवेकी बनता है। केवल आर्ष–ग्रन्थों का पठन–पाठन यदि जीविका प्रदान करने में सहायक नहीं है तो आधुनिक शिक्षा मात्र से मानव मनुष्य नहीं बन सकता, यह भी उपेक्षित बिन्दु नहीं है। यह यथार्थ प्रतीत होता है कि आज सम्मान और आजीविका की भाषा प्रायः अंग्रेजी है और आंग्ल भाषा का वर्चस्व स्वतंत्रता के पूर्वकाल से भी ज्यादा है। विश्व में हमारा भी स्थान अद्वितीय बने, इस हेतु हमें छात्रों को आंग्ल–भाषा एवं आधुनिक विषयों के अध्ययन के साथ–साथ भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय, सामाजिक, नैतिक मूल्यों का भी ज्ञान कराना आवश्यक है। नवीन वैज्ञानिक विषयों के साथ–साथ उनमें भारतीय भाषाओं के प्रति प्रेम एवं जीवन मूल्यों के प्रति श्रद्धा भी उत्पन्न की जानी चाहिए। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विद्यालय पाखण्ड, दिखावा एवं विलासिता का वातावरण उत्पन्न कर रहे हैं। माता–पिता के अहंकार का लाभ उठाकर उन्हें लूटना उनका उद्देश्य है। इन विद्यालयों के अतिरिक्त भी छात्र–छात्राओं ने अपने साधनरहित स्थानों में अभ्यास और प्रतिभा के बल पर देश–विदेश में कीर्तिमान स्थापित किये हैं। शिक्षण की प्राचीन परम्परा में हमें पुरुषार्थ और सफलता में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव प्रतीत होता है जिसमें कर्म की भावना का बीज सन्निहित है कि हमारे दाहिने हाथ में पुरुषार्थ और बायें हाथ में सफलता है–

''कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सत्य आहितः'' (ऋग्वेद)

इसी प्रकार यदि आधुनिक एवं प्राचीन परम्परा के सम्मिलन के द्वारा विचारपूर्वक शिक्षा को सम्पूर्ण समाज की दृष्टि से उपयोगी बनाने हेतु प्रयत्न एवं परिवर्तन किये जायें, तो संस्कृति और संस्कार दोनों की रक्षा के साथ–साथ उन्नति के अभिनव सोपान भी सृजित किये जा सकते हैं।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778 डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

वास्तविक तस्वीर जिन्ना की

इंकलाब (५ मई) के अनुसार अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में जिन्ना के नाम का जो जाल कुछ शरारती तत्त्वों ने फेंका था, उसमें कुछ मुसलमान फँस गए हैं। सोशल मीडिया पर कुछ मुसलमान जिन्ना का समर्थन करते दिखाई देते हैं। हालाँकि सच्चाई यह है कि इस देश के ९९ प्रतिशत मुसलमान जिन्ना को पसन्द नहीं करते। अगर वे पसन्द करते तो पाकिस्तान में होते। बहस करने वालों को शायद इस बात की जानकारी नहीं है कि जिन साम्प्रदायिक तत्त्वों ने

कबिरा खड़ा बजार में

दूसरों की वाहवाही, अपनी जिम्मेदारी से कोसों दूर

हम सभी ने बहुत सी कहानियां सुनीं हैं कि कैसे राजा के पास यह शक्ति रहती है कि वह पत्थर भी छूता है, तो वह सोना बन जाता है। लेकिन क्या पता था कि मोदी सरकार में हम इसे साकार होते देख लेंगे। कम से कम मुकेश